पृथ्वी पर हम सब समय माया के यात्री हैं

साप्ताहिक

समय माया

R.N.I. No.: MPHIN/2006/20685

प्रधान संपादक- अजमेरा एस.पी. कुमार
B.COM., M.A., LLB, CAIIB, DLLLW&PM

Webite: www.samaymaya.com
Email: samaymaya@gmail.com
samaymaya@rediff.com

Cell: +91 9425125569
+91 9479535569

(C) All Copyrights reserved with chief editor, do not publish any matter without prior written permission

In case of any dispute, may be solved only in Indore Court Jurisdiction

वर्ष 18 | अंक 07 | प्रति सोमवार, इंदौर, 16 सितंबर से 22 सितंबर 2024 | पृष्ठ 8 | मूल्य 5/- रुपए

विश्व शांति के लिए रुस, चीन, ईरान, उत्तरी कोरिया को होना चाहिए एकसाथ

अमेरिका दुनिया का सबसे बड़ा आतंकी, होना चाहिए खत्म

अमेरिका व नाटो गिरोह, रुस युक्रेन युद्ध में ढाई साल से हथियारों गोला बारूद की आहुति डाल रूस यूक्रेन को नष्ट करने के साथ कर रहा बर्बाद पर्यावरण

विश्व का सबसे बड़ा शैतान अमेरिका जैसा की भारतीय पुराणों शास्त्रों में लिखा है, की पाताल में राक्षसों का वास है। पूरा संकर वर्णीय म्लेच्छों का अमेरिका उसके सारे संयुक्त राष्ट्र व विश्व स्तरीय संगठनों संयुक्त शैतान संगठन, विश्व घातक संगठन, विश्व आतंकी व्यवसाय संगठन के साथ उसका यूरोपीयन नाटो गिरोह जो द्वितीय विश्व युद्ध से डरे हुए 12 देशों के साथ मिलकर बनाया गया था।

25 फरवरी 2022 से अभी तक जिद्दी सूअर यूक्रेन का जेलेंस्की जो नाटों के युरोपीय गुंडो के समूह में शामिल होना चाहता है। जबकि यूक्रेन सोवियय रूस का हिस्सा था जो 1986 में अलग हुआ। जिसे रूस नाटो के साथ अपनी सुरक्षा के कारण शामिल होने देना नहीं चाहता। अमेरिका का उद्देश्य पुणे में शामिल कर रूस के नजदीक अपने सेंड अड्डे बनाने के साथ रूस को पूरी तरीके से भेजना चाहता है और उसकी अपनी सुरक्षा के कारण युक्रेन के जिद्दी पिद्दी जेलेंस्की पर आक्रमण करने के लिए विवश होना पड़ा। अमेरिकी व युरोपीय भुखेरे श्वानों का मीडिया इस सच को नहीं बताता। और अमेरिका व यूरोप के मीडिया की जिसमें सीएनएन और ब्रिटेन का बीबीसी इस सच को जनता के सामने नहीं रखते और छोटी सी कहानी है यदि रूस यूक्रेन का जलांस की इस जिद को त्याग दे तो हाल ही में युद्ध खत्म हो सकता है। उसमें मोदी जैसे किसी देश को बर्बाद करने कदम कदम पर झूठ बोलने वाले बकवादी कि कहीं कोई

आवश्यकता ही नहीं भारत काटुकुर मीडिया भले ही मोदी की तारीफ करें और कहे कि मोदी को मध्यस्थ के लिए बुलाया जा रहा है किसी मध्यस्थ की जरूरत नहीं जेंलेंस्की मात्र नाटो में शामिल होने की जिद्द त्याग दे और युद्ध खत्म करवा दे।

इसकी विपरीत पिछले 30 महीनों से अमेरिका और पूरा नाटो जिसमें विशेष रूप से फ्रांस ब्रिटेन जर्मनी रूस व यूक्रेन को बर्बाद करने यूक्रेन को लगातार अपने समय बाधित गोला बारूद टैंक तोप मिसाइल जहाज हथियारों, रडार कम्युनिकेशन सिस्टम की आपूर्ति कर रहे हैं। और युद्ध की आग में घी डाल रहे हैं।

अब एक ही रास्ता बचता है चीन ईरान, उत्तरी कोरिया व अन्य रुस के सहयोगी देश मिलकर सबसे पहले अमेरिका और नाटो देशों की जो यूक्रेन को हथियारों व अन्य सामग्री की आपूर्ति की जा रही है। सबसे पहले उसको रोके ना मानने पर अमेरिका फ्रांस जर्मनी ब्रिटेन को समझाएं फिर धमकाएं। न करने पर सीधे अमेरिका पर ही परमाविक और आणविक मिसाइल युक्त हमले करें। यदि युद्ध तृतीय विश्व युद्ध में बदल जाता है तो भी कुछ बुरा नहीं है क्योंकि नाटो भी अभी तक सांस निभा रहे हैं जब तक अमेरिका कमजोर नहीं पड़ रहा जहां अमेरिका कमजोर पड़ेगावहां पर यह नाटो भी पलटी मार जाएंगे।

दुनिया के सारे देश मिलकर सबसे पहले अंबेडकर को नष्ट करें क्योंकि उसके जालसाज डकैत संगठनों ने जिस तरह से पूरे एक शताब्दी से पूरी दुनिया में लूट डकैती जालसाजी का तांडव मचा रखा है वह आने वाली पीढियां को बर्बाद करेगा यदि विश्व में शांति चाहिए तो सबसे पहले अमेरिका और ब्रिटेन को खत्म किया जाना चाहिए और जब युद्ध चल ही रहा है और वह प्रत्यक्ष रूप से आग में घी झोंक ही रहा है। तो इस शताब्दी में उसकी पर्याप्त जवाब मिले ताकि उसका इंटरनेट और सारे उसके जालसाज संगठनों को खत्म किया जा सके।

विश्व की जनता को अपने आने वाली पीढ़ी के सुरक्षित सुखद भविष्य के लिए निरंतर प्रार्थना करना चाहिए कि यह राक्षास देश न केवल युद्ध में बल्कि उसके पूर्व ही प्राकृतिक आपदाओं भीषण बाढ़ भूकंप तूफान अग्निपात आंतरिक गृह युद्ध में ही नष्ट होता रहे।

4 अप्रैल 1949 को, 12 देशों के विदेश मंत्रियों ने वाशिंगटन, डी.सी. के विभागीय सभागार में उत्तरी अटलांटिक संधि (जिसे वाशिंगटन संधि के रूप में भी जाना जाता है) पर हस्ताक्षर किए। नाटो के संस्थापक सदस्य देश थेः बेल्जियम, कनाडा, डेनमार्क, फ्रांस, आइसलैंड, इटली, लक्जमबर्ग, नीदरलैंड, नॉर्वे, पुर्तगाल, यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका। नाटो का निर्माण 4 अप्रैल 1949 को यूरोप और उत्तरी अमेरिका के 12 देशों द्वारा किया गया था। तब से, 10 दौर के विस्तार (1952, 1955, 1982, 1999, 2004, 2009, 2017, 2020, 2023 और 2024 में) के माध्यम से 20 और देश नाटो में शामिल हो चुके हैं। **(शेष पेज 2 पर)**

घोर धूर्त मोदी ने चंद्रचूड़ के घर पर पूजा के बहाने जा किया बदनाम

नैतिकता के आधार पर CJI को देना चाहिए इस्तीफा

भारतीय अधिवक्ता परिषद व पूर्व न्यायाधीशों को न्याय की गरिमा वह 140 करोड लोगों का विश्वास बनाए रखने मुख्य न्यायाधीश चंद्रचूड़ से इस्तीफा मांगना चाहिए ना देने पर सभा बुला हटाने की व्यवस्था करनी चाहिए।

देश की सत्ता को तीसरी बार भी भारतीय प्रताणना सेवा के अधिकारियों को डरा धमका और घोर भ्रष्ट और मूढ़ चुनाव आयोग के माध्यम से इवीएम की जालसाजियों और बिना मशीनों से प्राप्त मतों की संख्या की वर्गीकृत सारणी बनवाये ही जालसाजी पूर्ण तरीके से भाजपा को जिता दिया गया। स्वाभाविक सी बात है आपराधिक मानासिकता के ऐतिहासिक अपराधिक मोदी और अमित शाह के विरुद्ध उनके अपराधों की कच्ची चिट्ठे जो दशकों

से समाचार पत्रों पत्रिकाओं में छप रहे हैं। सर्वोच्च न्यायालय नेअमित शाह को गुजरात में ना घुसने देने का आदेश भी दे चुकी है। पिछले 10 सालों में दोनोंजो देश के श्रेष्ठ वह सर्वोच्च पदों पर बैठ कर हर तरह से हर विभाग की कर प्रणाली को ध्वस्त करअपने मनमर्जी से अपने व बहुराष्ट्रीय कंपनियां पूंजीपति मित्रों माफियाओं के हितों की सुरक्षा के हिसाब से सत्ता को हांक रहे हैं।

वकीलों और पूर्व न्यायाधीशों ने सीजेआई चंद्रचूड़ के आवास पर पीएम मोदी के दौरे पर सवाल उठाए: प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ के घर पर गणपति पूजा के लिए जाने का एक वीडियो सामने आने के बाद कई वकीलों, पूर्व न्यायाधीशों और विपक्षी नेताओं ने न्यायपालिका की स्वतंत्रता पर चिंता व्यक्त की.

(शेष पेज 6 पर)

भारत में ऑनलाइन गेमिंग में महिलाओं और छोटे शहरों का बढ़ता रूझान

तकनीकी क्रांति के दौर में दुनिया तेजी से बदल रही है। इस परिवर्तन के साथ जहां अनगिनत फायदे सामने आए हैं, वहीं कुछ गंभीर चुनौतियां भी उभर कर आई हैं। हालांकि, इन चुनौतियों के बावजूद तकनीकी विकास को रोक पाना संभव नहीं है। यह हमारा कर्तव्य है कि हम इस प्रगति के सकारात्मक पहलुओं को अपनाएं और नकारात्मक प्रभावों से बचें। यह बात न केवल रोजमर्रा की जिंदगी में लागू होती है, बल्कि भारत में तेजी से बढ़ रहे ऑनलाइन गेमिंग सेक्टर पर भी सटीक बैठती है। ऑनलाइन गेमिंग उद्योग भारत में तेजी से उभर रहा है, और इसका उदाहरण यह है कि इसे खेलने वाले लोगों में 41% महिलाएं हैं, और 66% से अधिक गेमर्स छोटे शहरों से हैं। भारत में लूडो की सबसे बड़ी ऑनलाइन गेमिंग कंपनी 'जुपी' के चीफ ऑफ पॉलिसी अश्विनी राणा के अनुसार, यह एक संकेत है कि ऑनलाइन गेमिंग की लोकप्रियता समाज के सभी वर्गों में फैल रही है। उन्होंने इस तथ्य पर

जोर दिया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी ऑनलाइन गेमिंग उद्योग की सराहना की है, क्योंकि यह क्षेत्र भविष्य में मानव जीवन को बदलने वाले अनुसंधानों का केंद्र बन सकता है। 'जुपी' की स्थापना 2018 में आईआईटी कानपुर के पूर्व छात्र दिलशेर सिंह द्वारा की गई थी। इस कंपनी ने बहुत कम समय में भारतीय ऑनलाइन गेमिंग बाजार में एक प्रमुख स्थान हासिल कर लिया है। भारत का ऑनलाइन गेमिंग सेक्टर अब चीन के बाद दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा बाजार है। हालांकि, इस सेक्टर की तेज़ी से बढ़ती लोकप्रियता के साथ कुछ चिंताएं भी सामने आई हैं, विशेष रूप से गेम की लत के संदर्भ में। अश्विनी राणा ने इस मुद्दे पर कहा कि किसी भी चीज की लत हो सकती है, चाहे वह मोबाइल फोन हो, टीवी हो, सोशल मीडिया हो, या फिर शराब और तंबाकू। यह महत्वपूर्ण है कि हम अपनी सीमाएं स्वयं तय करें और इन आदतों को नियंत्रण में रखें।ऑनलाइन गेमिंग सेक्टर में अच्छी और बुरी दोनों तरह की कंपनियां हैं। विदेशी कंपनियां, जो जुआ खेलने के लिए लोगों को प्रेरित करती हैं, भारतीय बाजार में भी सक्रिय हैं।

(शेष पेज 7 पर)

संपादकीय

हिंदी दिवस और राजकीय पाखंड

हिंदी को लेकर इस पखवारे अनेक आयोजन होंगे जिनमें उसे लेकर बहुत सारे दावे किए जाएंगे; उसके माध्यम से भारत की एकता की संभावना का गुणगान किया जाएगा और उसके विश्व-भाषा बन जाने का राग अलापा जाएगा. हिंदी को लेकर राजकीय स्तर पर जो पाखंड है, वह एक बार फिर, सामने आने से रुक जाएगा. लाखों रुपये खर्च़ कर हिंदी पखवारा हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी मनाया जाएगा.

इस सबके बरक्स़ ज़रा सचाई पर नज़र डाल लें. सचाई यह है कि दो-तीन अपवादों को छोड़कर भारत भर में विश्वविद्यालयों के हिंदी विभाग हिंदी साहित्य की समझ बनाने, प्रासंगिक शोध कराने, साहित्य का रसास्वादन कराने की क्षमता बढ़ाने में सर्वथा विफल और अक्षम हो चुके हैं. विश्व तो छोड़ें, हिंदी अंचल का कोई भी विश्वविद्यालय भारत के श्रेष्ठ विश्वविद्यालयों की सूची में स्थान नहीं पाता. हिंदी में, सामाजिक विज्ञान को छोड़कर ज्ञानोत्पादन बेहद क्षीण और शिथिल है. हिंदी मध्यवर्ग अपनी मातृभाषा से, भारत में, सबसे तेज़ी से दूर जाता वर्ग है. हिंदी में एमए और शोध करने वाले छात्र साफ़-सुथरी हिंदी न बोल पाते हैं, न लिख. हिंदी औपचारिक रूप से भले राजभाषा कहलाती है वह राजभाषा नहीं बन पाई, न केंद्र में, न हिंदी भाषी राज्यों में जहां पहले हिंदी का प्रयोग अच्छा-खास़ा था पर इधर कम हुआ है. हिंदी में उसके साहित्य के अलावा कोई और उपलब्धि संभव नहीं हुई है. हिंदी अंचल की राजनीति इस समय हिंदुत्व, धर्मांधता, सांप्रदायिकता, जातिवाद की चपेट में है और राजनीति-धर्म-मीडिया के गठबंधन ने हिंदी को झगड़ों-झांसों, हिंसा, घृणा और झूठ की मातृभाषा बना दिया है. हिंदी मीडिया ने सदल-बल हिंदी को अपार उत्साह से विकृत-प्रदूषित किया है. दक्षिण में उसकी स्वीकार्यता, लगता है, घटी है. हिंदी में शिक्षा और साक्षरता का प्रसार हुआ है. लेकिन देश के सबसे धर्मांध, हिंसक जातिग्रस्त लोग हिंदी में हैं और ज़्यादातर पढ़े-लिखे हैं. स्त्रियों-बच्चों-दलितों-अल्पसंख्यकों-आदिवासियों के विरुद्ध जो जघन्य अपराध देश भर में होते हैं उनका 68 प्रतिशत, प्रमाणित सरकारी आंकड़े बताते हैं, हिंदी अंचल में होता है. रही विश्वभाषा बनने की बात सो बोलने वालों की संख्या के आधार पर हिंदी संसार की पांच बड़ी भाषाओं में एक है. पर ज्ञान, परिष्कार, विपुलता आदि के कोण से देखें तो तथ्य यह है कि हिंदी, चीनी या जापानी या कोरियाई की तरह ज्ञान-विज्ञान की भाषा नहीं है, न उस ओर अग्रसर ही है. हिंदी पखवारे को स्थिति का आत्मालोचक आकलन करने का अवसर होना चाहिए, न कि पाखंड छुपाने और निराधार दावे करने और ढोल बजाने का, जो वह इस बार भी हस्बेमामूल होगा ही.

इन दिनों दिल्ली के किरण नादर कला संग्रहालय में अमिताव दास की कलाकृतियों की अब तक की सबसे बड़ी प्रदर्शनी चल रही है जिसे देखने हर दिन काफ़ी लोग, युवा छात्र आदि आ रहे हैं. इस प्रदर्शनी ने अमिताव दास को हमारे समय के एक महत्वपूर्ण और ज़्यादातर अमूर्त चित्रकार के रूप में प्रतिष्ठित और लोकप्रिय कर दिया है. इसी प्रदर्शनी में एक शाम संग्राहक रूबीना करोड़े ने अमिताव दास से एक लंबी बातचीत की. अमिताव अल्पभाषी हैं. कम बोलते हैं और संक्षेप में ही बोलते हैं.

उन्होंने यह बताया कि उनकी दिलचस्पी सिनेमा, संगीत, कविता आदि में रही है और 'ये दूसरी कलाएं' उनकी प्रेरणा के स्रोत रहे हैं. उन्होंने कवि लोर्का, कुरोसावा, बीथोवन की नवीं सिम्फ़नी आदि का ज़िक्र किया. एकाध उक्ति पिकासो की भी बताई. यह उल्लेखनीय था कि उन्होंने कला जगत में अपने किसी पूर्वज का नाम नहीं लिया. हिंदी आलोचना में प्रचलित पदावली में उन्हें एक कलावादी कलाकार क़रार दिया जा सकता है!

रूबीना करोड़े ने जब इसका ज़िक्र किया कि अमिताव की कलाकृतियों में कई तरह की कलासामग्री का उपयोग अप्रत्याशित ढंग से होता है तो मुझे लगा इन कृतियों का लक्ष्य अपने से बाहर नहीं है, और उनमें अप्रत्याशित की रमणीयता है. यह रमणीयता उन्हें संगीत के बहुत निकट ले आती है. इसका भी उल्लेख हुआ कि कृतियों में एक तरह की स्पष्ट लयात्मकता हैः रंग-रेखाओं-आकारों से जो लय बनी है वह एक तरह के वृंदवाद में पर्यवसित हो जाती है. अमिताव ने स्वयं कहा कि जब-तब किसी कृति को देखना नहीं, सुनना चाहिए.

कृतियों की पूर्णता-अपूर्णता की चर्चा के दौरान अमिताव ने कहा कि उनके पास कहने का चित्रित करने को कोई कथा या आख्यान नहीं होता. जब कलाकृति पूरी हो जाती है तब कहानी शुरू होती है. ज़ाहिर है कि तब कहानी कृति में नहीं दर्शक या रसिक में मन में शुरू होती है. मुझे याद आया कि याज्ञवल्क्य ने कहा है कि यह संसार कथा समाप्त होने के बाद बचे रह गए प्रभाव की तरह है. संसार हो न हो, अमिताव का कला-संसार ऐसा ही है.

यह सोचना रोचक है कि कृति में जो होता है, उससे क़ाफी अलग और आवश्यक कुछ और उसके बाहर होता है. अगर इस बाहर का एहसास, कुछ समझ-पकड़ न हो तो कला का रसास्वादन अधूरा रहता है. फिर यह भी दिलचस्प है कि कोई कृति अपने अंदर क्या समाहित कराती उसका तो महत्व और भूमिका होते ही हैं, वह अपने बाहर क्या छोड़ती है यह भी जानना ज़रूरी होता है.

ऐसा जानना आसान नहीं होता क्योंकि अक्सर हम ऐसे ब्योरों में जाए बिना सरसरी तौर पर कृति देखने के आदी होते हैं. कला देखने-समझने के लिए सिर्फ़ भौतिक रूप से उसके सामने होना और देखना काफ़ी नहीं हैः कुछ और कोशिश ज़रूरी है जिसके लिए हमारे पास अक्सर फुरसत, धीरज नहीं होते. हम देखते हुए भी कम देखते हैं, समझते हुए भी कम समझते हैं.

इस समय संसार के विभिन्न समाजों में जो हो रहा है उसका एक पक्ष इन सभी में टेक्नोलॉजी की लगातार बढ़ती हुई उपस्थिति और भूमिका है. सभी समाज देर-सबेर 'टेक्नोलॉजिकल' समाज बन रहे हैं. टेक्नोलॉजी विकास का माध्यम है और उसका पैमाना भी. भारत में भी हमारी टेक्नोलॉजी पर निर्भरता, उससे अपेक्षाएं, उस पर भरोसा लगातार बढ़ रहे हैं. अब हम टेक्नोलॉजी से संयमित-नियमित समाज हैं.

साथ-साथ संसार भर में समाज अधिकाधिक 'ब्यूरोक्रेटिक' समाज हो रहे हैंः नियमों-उपनियमों, प्रक्रियाओं, मनाहियों का जाल सा फैल गया है. इस वर्गीकृत समाज में नई गैऱ-बराबरी, नए अन्याय, नई चूकें और अपराध, नए दंड विकसित हो रहे हैं और मानवीय व्यवस्था, मानवीय संचालन और संचार, यहां तक कि मानवीय विचार भी इससे प्रभावित और नियमित किए जा रहे हैं. ज़्यादातर समाज ऐसे विकसित हो रहे हैं कि उनमें पूंजी और सत्ता का एकाधिपत्य, नियमन-नियंत्रण, निगरानी और चौकसी, स्वतंत्रता और निजता में कटौती फल-फूल रहे हैं.

टेक्नोलॉजी ने आवागमन, संचार, सम्प्रेषण, सूचना, ज्ञान, अनुसंधान, संवाद आदि को निश्चय ही सुगम, सुलभ और किसी हद तक लोकतांत्रिक किया है. पर वही टेक्नोलॉजी, जो यह सब करती है झूठ, अपसूचना, फ़ेक न्यूज़, नफ़रत, अफ़वाह, दुर्व्याख्या, तरह-तरह की वाग्हिंसा और अन्य तरह की हिंसा फैलाने में बड़ी सक्रिय रही है. असल में टेक्नोलॉजी ने अब ऐसी स्वायत्तता पाली है कि अब टेक्नोलॉजी और टेक्नोलॉजी को जन्म दे रही है. वह अपने को ही बहुत तेज़ी से आउटडेट कर रही है.

अब वह मुक़ाम आ चुका है जब टेक्नोलॉजी मानवीय सर्जनात्मकता, मानवीय कल्पनाशीलता, मानवीय बुद्धि के क्षेत्र में घुसपैठ कर उन्हें अपदस्थ करने के लिए, उनका स्थानापन्न बनने की ओर अग्रसर है. अब तक तो टेक्नोलॉजी ने हमारी इंद्रियों की सहायता करने, उन्हें अधिक कुशल और सक्षम बनाया थाः अब वह मनुष्य के ज्ञान-संज्ञान के अहाते में दाखिल़ हो रही है. मनुष्य का अंतर्जगत टेक्नोलॉजी के कब्ज़े में आने वाला है.

अभी तक मनुष्य को अन्य प्राणियों से अलग इसलिए माना जाता रहा है कि वह अमूर्तन, कल्पना, समय-बोध, ज्ञान आदि रच सकता है. कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) के युग में मनुष्य के ये सभी काम उससे छिन जाएंगे और वे कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा किए जाने लगेंगे. साहित्य और कलाओं में रचना, मौलिकता, प्रतिभा, लेखकत्व, रचयिता, अद्वितीयता आदि सभी संदिग्ध हो जाएंगेः जो काम मनुष्य करता था वह मशीनें करने लगेंगी, शायद अधिक तेज़ी और फुर्ती से. हम मनुष्य कम, मानवीय कम, 'टेक्नोलॉजिकल' अधिक हो जाएंगे. यह स्वप्न है कि दुस्स्वप्न, आकांक्षा है कि आत्महन्ता मानवीय प्रयत्न, हम इसकी ओर बढ़ रहे हैं. इसे अनदेखा नहीं किया जा सकता कि जिस समय में अनेक समाज टेक्नोलॉजी के प्रभुत्व में आ रहे हैं उसी समय उनमें लोकतांत्रिकता घट रही है; नस्ली हिंसा और नफ़रत बढ़ रही हैं; धार्मिक और साम्प्रदायिक कट्टरताएं उफान पर हैं; राजकीय और सामाजिक हिंसा तीखी. और व्यापक हो रही है; निजता की लगातार हानि हो रही है; एकरूपता बढ़ती जा रही है; कई अपराधों की जघन्यता उरूज पर है; नई सक्षम टेक्नोलॉजी का उपयोग कर गाज़ा और यूक्रेन में हज़ारों लोग-बच्चे-स्त्रियां मारे जा रहे हैं; अस्पताल-स्कूल मिसमार हो रहे हैं और दुनिया लाचार देख रही है. टेक्नोलॉजी की तथाकथित तटस्थता, निष्पक्षता बेहद संदिग्ध हो चुकी है और वह इन सबमें अपनी सक्रिय हिस्सेदारी से इनकार नहीं कर सकती. इस सबकी कितनी खब़र हमें साहित्य और कलाओं में मिल रही है? क्या वे हमें सजग रूप से टेक्नोलॉजी द्वारा लाए जा रहे स्वर्ग और सत्यानास से अवगत करा रहे हैं? क्या वे हमें अपनी मानवीयता में संभाव्य कटौती से आगाह कर रहे हैं? ये सब बातें ध्यान में आईं जब सितंबर 2024 के पहले सप्ताह में एसोसिएशन ऑफ क्रिएटिव थ्योरी, हर्बर्ट मार्क्यूतज सोसायटी, रज़ा फाउंडेशन द्वारा आयोजित 11 वें 'क्रिएटिव थ्योरी कोलोकियम' में 'टेक्नोलॉजी एंड सोसाइटी' विषय पर एक लंबा परिसंवाद शुरू हुआ. उसमें जिन विषयों पर विचार हो रहा है उनमें टेक्नोलॉजी का दर्शन, कॉस्मिक चेतना और टेक्नोलॉजी, औषधि और टेक्नोलॉजी, विज्ञान-टेक्नोलॉजी और समाज, टेक्नोलॉजी और लोकतंत्र, श्रम-क़ानून और टेक्नोलॉजी, साहित्य और टेक्नोलॉजी आदि शामिल हैं. बड़ी संख्या में युवा अध्येताओं, शोधकर्ताओं, छात्रों की उपस्थिति ने आश्वस्त किया कि युवाओं में अभी बौद्धिक जिज्ञासा और बेचैनी बची हुई है.

अमेरिका दुनिया का सबसे बड़ा आतंकी, होना चाहिए खत्म

पेज 1 का शेष

उत्तरी अटलांटिक संधि का अनुच्छेद 10 बताता है कि देश किस तरह से गठबंधन में शामिल हो सकते हैं। इसमें कहा गया है कि सदस्यता किसी भी 'यूरोपीय राज्य के लिए खुली है जो इस संधि के सिद्धांतों को आगे बढ़ाने और उत्तरी अटलांटिक क्षेत्र की सुरक्षा में योगदान करने की स्थिति में है'। किसी देश को गठबंधन में शामिल होने के लिए आमंत्रित करने का कोई भी निर्णय उत्तरी अटलांटिक परिषद, नाटो के प्रमुख राजनीतिक निर्णय लेने वाले निकाय द्वारा सभी सहयोगियों के बीच आम सहमति के आधार पर लिया जाता है। अमेरिका और जर्मनी ने बुधवार को यूक्रेन को कुछ ऐसे उन्नत हथियारों से लैस करने का वादा किया, जिनकी उसे लंबे समय से विमान को मार गिराने और तोपखाने को नष्ट करने के लिए जरूरत थी, क्योंकि रूसी सेना पूर्व में एक महत्वपूर्ण शहर पर कब्जा करने के करीब पहुंच गई है। जर्मनी ने कहा कि वह यूक्रेन को आधुनिक विमान-रोधी मिसाइलें और रडार सिस्टम मुहैया कराएगा, जबकि अमेरिका ने घोषणा की कि वह चार परिष्कृत, मध्यम दूरी की रॉकेट प्रणाली और गोला-बारूद मुहैया कराएगा। अमेरिका यूरोप में व्यापक युद्ध छेड़े बिना रूसियों से बचाव करने में यूक्रेन की मदद करने की कोशिश कर रहा है। पेंटागन ने कहा कि उसे आश्वासन मिला है कि यूक्रेन रूसी क्षेत्र में नए रॉकेट नहीं दागेगा। क्रेमलिन ने अमेरिका पर 'आग में घी डालने' का आरोप लगाया। पश्चिमी हथियार रूस की बहुत बड़ी और बेहतर सुसज्जित सेना को रोकने में यूक्रेन की सफलता के लिए महत्वपूर्ण रहे हैं, राजधानी पर धावा बोलने के उसके प्रयास को विफल किया और मास्को को अपना ध्यान पूर्व में औद्योगिक डोनबास क्षेत्र पर केंद्रित करने के लिए मजबूर किया। लेकिन रूस द्वारा पूर्व में धीरे-धीरे आगे बढ़ते हुए शहरों पर बमबारी करने के बीच, यूक्रेनी राष्ट्रपति वोलोडिमिर ज़ेलेंस्की ने बार-बार अधिक और बेहतर हथियारों की मांग की है और पश्चिम पर बहुत धीमी गति से आगे बढ़ने का आरोप लगाया है। बिडेन ने रूस के अंदर पश्चिमी लंबी दूरी की मिसाइलों के इस्तेमाल के लिए खुलेपन का संकेत दिया, क्योंकि उन्होंने ब्रिटेन के नेता से इस बारे में चर्चा की राष्ट्रपति जो बिडेन यूक्रेन को रूस के अंदर गहरे लक्ष्यों पर पश्चिम द्वारा प्रदान की गई मिसाइलों को दागने की अनुमति देने में नए खुलेपन का संकेत दे रहे हैं, और शुक्रवार को व्हाइट हाउस में अपने नए ब्रिटिश समकक्ष के साथ इस मामले पर चर्चा करने की योजना बना रहे हैं। बैठक से पहले, अमेरिकी अधिकारियों ने कहा कि उन्हें उम्मीद नहीं थी कि बिडेन अमेरिका द्वारा प्रदान की गई सेना सामरिक मिसाइल प्रणालियों - जिन्हें ATACMS के रूप में जाना जाता है - को यूक्रेनी सीमा से दूर रूस के अंदर लक्ष्यों पर लॉन्च करने की अनुमति देने पर तुरंत हस्ताक्षर करेंगे। लेकिन अमेरिका की तरह, यूनाइटेड किंगडम ने अपनी लंबी दूरी की स्टॉर्म शैडो मिसाइलों को कीव भेजा है। उनका उपयोग, फ्रांस से समान हथियारों के उपयोग के साथ, वर्तमान में यूक्रेन के भीतर तक ही सीमित है, और किसी भी बदलाव के लिए अमेरिका की मंज़ूरी की आवश्यकता होगी - शुक्रवार की वार्ता में चर्चा का विषय। राष्ट्रपति ने हथियारों पर प्रतिबंधों को कम करने के लिए यूक्रेनी अधिकारियों के आह्वान का लंबे समय से विरोध किया है। लेकिन जैसे-जैसे युद्ध आगे बढ़ रहा है, और ईरान द्वारा रूस को बैलिस्टिक मिसाइलों की आपूर्ति पर अमेरिका की बढ़ती चिंता को देखते हुए, व्हाइट हाउस में संभावित बदलाव के बारे में गहन चर्चा चल रही है।

इस सप्ताह जब बिडेन से पूछा गया कि क्या वे पश्चिमी देशों द्वारा प्रदान की जाने वाली लंबी दूरी की मिसाइलों को रूस के अंदर एयरफील्ड, मिसाइल लांचर, ईंधन टैंक और गोला-बारूद डिपो जैसे सैन्य स्थलों को निशाना बनाने की अनुमति देंगे, तो उन्होंने कहा, 'हम अभी इस पर काम कर रहे हैं।' न्यूयॉर्क टाइम्स ने यूरोपीय अधिकारियों का हवाला देते हुए बताया कि बिडेन यूक्रेन के लिए लंबी दूरी की मिसाइलों का उपयोग करने का रास्ता साफ करने के कगार पर हैं, जब तक कि वह अमेरिका द्वारा प्रदान किए गए हथियारों का उपयोग नहीं करता है। बिडेन प्रशासन के भीतर, इस बहस ने कुछ अधिकारियों को प्रतिबंधों को कम करने का समर्थन किया है, जबकि अन्य ऐसे हैं जो अधिक संशयी दिखाई देते हैं, जो बढ़ने के जोखिम और इस तरह के कदम की उपयोगिता दोनों के लिए सावधान हैं।

मुख्यमंत्री, वित्त मंत्री, प्रधान सचिव वाणिज्य कर आयुक्त व अधिकारी सब माफियाओं के रखैल

कर चोरी करने वाले वाहनों को पकड़ रहे पुलिस एसडीएम

लगातार कर चोरी करने वाले वाहनों की सूचना में कार्य युक्त धनराजू, प्रधान सचिव अमित राठौर वित्त मंत्री जगदीश देवड़ा मुख्यमंत्री को देने व समाचार पत्रों में छापने के बाद भी डकैतों पर कोई असर नहीं।

मध्य प्रदेश में पुनः भाजपा की सरकार आने और मुख्यमंत्री बदलने के बाद जनता को प्रशासनिक ढांचे में बदलाव के साथ सुधार की उम्मीद थी। परंतु जैसा कि लिखा और कहा गया था, की है कठपुतली मुख्यमंत्री मोहन यादव केंद्र व राज्य सरकार के प्रशासन पर लगाम लगा प्रदेश में हो रहे भू कॉलोनी खनन, वन, जुआ, सट्टा, ऑनलाइन गेमिंग, क्रिकेट सट्टा, संयुक्त अपराध गिरोह, राजस्व, विद्युत, रेत, परिवहन में तो एक माफिया जो परिवहन विभाग के कार्यालय में बैठकर सभी प्रकार के वाहन चालन अनुज्ञप्ति, वाहनों का स्थानांतरण मासिक त्रैमासिक शुल्क आदि, नाम परिवर्तन आदि में षड्यंत्रों को अंजाम देकर मोटी कमाई कर परिवहन विभाग के कर्मचारी अधिकारी से लेकर आयुक्त को फर्जीवाड़ी की कमाई से टुकड़े डाल पलता व पालता है। दूसरा माफिया वह है जो यात्री वाहन स्वामी होकर यात्री वाहनों का प्रबंध चलाता यात्रियों से मनमानी वसूली करता मनचाहा शुल्क लूटता है। चाहे उसका वाहन कैसा भी हो उसमें भारी भ्रष्टाचार करता है और तीसरा माफिया जो माल वाहकों का स्वामी व ट्रांसपोर्टर हैं। जो नियम विरुद्ध व नियमों को तोड़ वैध अवैध माल का परिवहन कर चला कर करचोरी करता परिवहन करवाता है, इसी प्रकार ड्रग, शराब, यौनाचार, शिक्षा, चिकित्सा, ठेकेदार गुटका आदि के प्रदेश भर में फैले गुंडे बदमाशों माफियाओं पर संबंधित विभागों में बैठे कर्मचारियों, अधिकारियों से लेकर जिला संभागीय और मुख्यालय के अधिकारियों जो भ्रष्टाचारों को संरक्षण देकरअपनी मोटी कमाई के लिए सभी प्रकार के माफियाओं जो की भाजपा कांग्रेस के नेता भी हैं। को पालता पोसता और मोटी कमाई करता है। अधिकांश नेता जो या तो स्वयं बड़े माफिया या माफिया के संरक्षण दाता होने के साथ उनके संबंध संबंधित विभाग के अधिकारियों से लेकर मंत्री तक होने के साथ वह विभागीय प्रधान सचिव सचिव आयुक्त संचालक प्रमुख अभियंता को अपनी जेब में रख फर्जी वाड़ा कर एक तरफ जनता को लूटता है तो दूसरी तरफ शासन को हर वर्ष 3 से 5000 करोड रुपए का चूना लगाता है यही हाल मध्य प्रदेश के वित्त मंत्रालय में बैठे वित्त मंत्री जगदीश देवड़ा का हैजो पूरी तरह से मुख्यमंत्री धर्म मोहन यादव और मोहन यादव पूरी तरीके से दिल्ली और प्रदेश के भाजपा अध्यक्ष बीडी शर्मा के इशारे पर नाचते हैं। इसलिये वाणिज्य कर में बैठे प्रधान सचिव अमित राठौर वाणिज्य कर आयुक्त धनराजू अपने ही विभाग में बैठे एंटी इवीजन ब्यूरो की जिनका काम मल वाहकों के माध्यम से की जारी कर चोरी को

कर चोरी वाहनों से माल पकड़ने की घटनाएँ लगातार धार जिले में बढ़ती जा रहीं
प्रसानिक अधिकारी मौन?
आखिर किसका संरक्षण है जो खुलेआम हो रहा सरिया अवैध व्यापार?
पुलिस थाना कुक्षी

एसपी ने पकड़वाया टैक्स चोरी का ट्रक...!

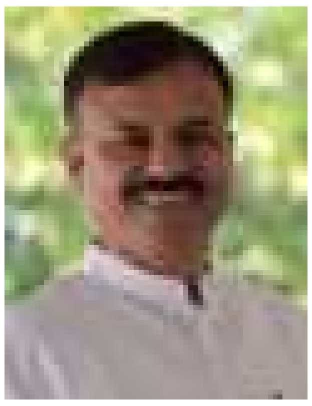

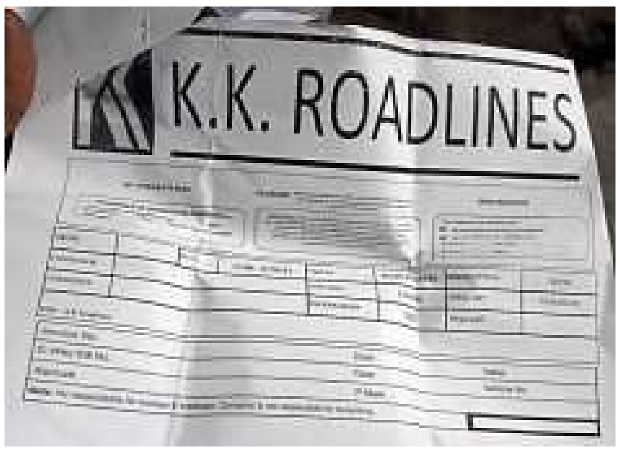

जीएसटी अधिनियम 2017 की धारा 68, 71 के अंतर्गत रास्ते में रख कर माल की जांच करना बिल बिल्टी भी देखना होता है। के अधिकार जो कानून के अनुसार संयुक्त आयुक्त के पास होते हैं कानून का उल्लंघन कर आयुक्त धनराजू ने अपने पास रखे हैं। जैसा कि समय माया समाचार पत्र में पूर्व के दो समाचार पत्रों में छपा था प्रतिदिन मध्य प्रदेश के 40 अंतरराष्ट्रीय मार्गों के अतिरिक्त लगभग छोटे बड़े 200 से ज्यादा अंतर राज्य मार्ग भी हैं। जिन से बिना यह फर्जी या आधे अधूरे बिल बिल्टी के लगभग 20000 से ज्यादा माल वाहक आते जाते हैं। और प्रतिदिन अरबों रुपए का कर चोरी कर रहे हैं। अनेकों ट्रकों ट्रालों के साथ बिल बिल्टी के साथ शिकायतें फोटो वीडियो के साथ की गई। परंतु आयुक्त झंडा जी ने कोई कार्रवाई नहीं की और ना ही किसी को जिसमें यदि एंटी इविजन के छह टीमों को छोड़ भी दिया जाए तो उनको संबंधित जिले के वृत्तों को पकड़ने व कार्यवाही करने के लिए आयुक्त को आदेशित करना चाहिए था। परंतु वह भी नहीं किया गया और आम नागरिकों को इसका समाचार मिलते ही एक ट्रक एसडीएम को शिकायत कर कर उनके माध्यम से पिछले 5 सितंबर से धार जिले के बदनावर थाने में खड़ा हुआ है और दूसरा ट्रक कल रात से एसडीएम के माध्यम से कुक्षी थाने में खड़ा किया हुआ है। जिसकी फोटो संलग्न हैं। परंतु घोर भ्रष्ट वित्त मंत्री जगदीश देवड़ा से लेकर अभी तक जिसके अंतर्गत वाणिज्य कर आबकारी और पंजीयन आता है और तीनों ही घोर भ्रष्ट विभाग पूरी तरह से माफियाओं के चंगुल में हैं। फिर दूसरी तरफ जब प्रदेश का मुख्यमंत्री मोहन यादव ही स्वयं शराब भू कॉलोनी शिक्षा खनन का पुराना माफिया रहा होतो वर्तमान में तो भाई प्रदेश का मुख्यमंत्री है तो सभी माफिया को पालकर अपनी मोटी वसूली करने में लगा रहने के कारण अरबो रुपए रोज की केवल वाणिज्य कर में ही कर चोरी करवा कर अपनी मोटी कमाई करने में लगा हुआ हैऔर इस राजस्व चोरी के कारण ही बार-बार प्रदेश की सत्ता को चलाने के लिएपांच 5000 करोड़ के वरुण बाजार से उठाकर जनता पर कर्ज व ब्याज का बोझ लाद रहा है। जबकि पूर्व से ही प्रदेश में चार लाख करोड रुपए से ज्यादा के कर्ज पर हर माह 4000 करोड रुपए का केवल ब्याज चुकाना पड़ता है पर इन बेशर्म निखट्टूओं को समाचार पत्रों में छपने के बाद में भी कोई खास असर नहीं पड़ता।

मोबाइल से बर्बाद करेंगे बच्चों के दिल दिमाग शरीर को

पेज 1 का शेष

जहां तक भारत सरकार का सवाल है तो वर्तमान में मूढ़ जाहिल घोर पाखंडी वाचाल धन के भुखेरे टुकड़खोर भेडियों का साम्राज्य है। जिनके सामने टुकड़ा डालो और जैसा चाहे कानून बनवा लो आदेश करवा लो।

हाल ही में भुखेरा जन पार्टी की केंद्र व राज्य सरकारों ने शिक्षा का बजट कम करने सरकारी स्कूलों में लाखों शिक्षकों की भर्तियां करने और कमी दूर करने की अपेक्षा बच्चों के माता-पिता को समाचार पत्रों के माध्यम से कहा गया है कि वह 3 साल से ज्यादा बड़े बच्चों को मोबाइल देकर उनकी अधिकांश पढ़ाई मोबाइल पर करवाई लाइब्रेरी के माध्यम से किताब में वही उपलब्ध करवाई जाएगी अपने आप की जागीर मत समझो जब शिक्षा का खर्च निकालने के लिए पिछले 24 सालों से लगातार न केवल पेट्रोल डीजल गैस विद्युत बिलों आदि पर 2% शिक्षा शेष वसूला जा रहा है तो वह किस के लिए है? बेशक उस शिक्षा सेस के धन से एक तरफ प्रधानमंत्री स्कूल व कालेज ऑफ़ एक्सीलेंस तो दूसरी तरफ प्रदेश में मुख्यमंत्री स्कूल आफ एक्सीलेंस खोलने की आड़ में कई गुना ज्यादा की डीपीआर बनवा 5 से 10 गुना ज्यादा की कीमत पर हजारों स्कूल कॉलेज के बड़े-बड़े भवनों का निर्माण कार्य करवाया जा रहा है इसकी आड़ में सारे गुजराती ठेकेदार भारी मोटी कमाई कर रहे हैं। पर ऐसे स्कूलों कॉलेजों से मतलब क्या है? जब उनमें उच्च शिक्षित शिक्षकों, प्राध्यापकों, अध्यापकों, अधिष्ठाताओं, प्राचार्यों की भर्ती न होने के कारण अभाव बना रहेगा तो क्या दीवारें श्याम पटल पढ़ायेंगे।

यदि सरकारें सचमुच वर्तमान और भविष्य की वीडियो को तन मन से मजबूत उच्च शिक्षित बनाने के लिए जिम्मेदार है तो सबसे पहले स्कूल कॉलेज की नई बिल्डिंग बनाने की अपेक्षा उच्च शिक्षित शिक्षकों की भर्ती कर विद्यार्थियों के सी ऋण

ई-पुस्तकालय के जरिए बच्चों को मोबाइल की लत लगाने की तैयारी

कार्य को तरीके से करवाए और तत्काल फ्रांस की तरह विश्व घातक संगठन की सलाहों को उपेक्षित कर 12वीं क्लास तक सभी सरकारी और निजी शिक्षण संस्थानों में मोबाइल लैपटॉप को प्रतिबंधित करें।

पैसा बचाने की अपेक्षा पुस्तकें खरीद कर पुस्तकालयों में उपलब्ध करवाने की व्यवस्था करें। ई लाइब्रेरी का जहां तक सवाल हैतो 12वीं कक्षा के बाद में विद्यार्थी स्वयं अपनी आवश्यकता के अनुसार मोबाइल पर मनचाही पुस्तक खोल सकेगा इसमें सरकार को कोई प्रोत्साहन देने की आवश्यकता नहीं। सरकार को उल्टे ही शिक्षण संस्थानों में निर्देशित कर मोबाइलों पर प्रतिबंध लगाने के साथ पूरी शिक्षा पांचवी से 12वीं तक स्लेट पेंसिल व पेन कॉपी किताबों से करवानी ही चाहिए।

इस संबंध में पिछले सप्ताह भास्कर ने जो छापा था वह यहां प्रस्तुत है।

इस उम्र के बाद महिलाओं की हड्डियों में लगता है जंक, इन टिप्स से रखें ख्याल

उम्र बढ़ने के साथ-साथ शरीर में कई समस्याएं शुरू होने लगती है। इन परेशानियों में हड्डियों का कमजोर होना भी शामिल है। महिलाओं में खासकर ये समस्या पाई जाती है, वो भी 30 की उम्र के बाद। इस उम्र में हड्डियों का घनत्व कम होना शुरू हो जाता है, जो अगर ज्यादा बढ़ जाए, तो ऑस्टियोपोरोसिस भी हो सकता है।

इसमें हड्डियां इतनी कमजोर होने लगती हैं कि हल्की सी चोट या झटके से भी हड्डी टूट सकती है। इसलिए 30 के बाद महिलाओं को अपनी हड्डियों का खास ध्यान रखना चाहिए। इस आर्टिकल में हम कुछ ऐसे टिप्स जानेंगे, जिनकी मदद से आप आसानी से हड्डियों को स्वस्थ और मजबूत बनाए रखने में मदद मिल सकती है।

पोषण का ध्यान रखें

कैल्शियम से भरपूर डाइट लें- दूध, दही, पनीर, हरी पत्तेदार सब्जियां, बादाम, और मछली जैसे कैल्शियम से भरपूर फूड आइटम्स खाएं।

विटामिन-डी - विटामिन-डी हड्डियों को कैल्शियम अवशोषित करने में मदद करता है। सूरज की रोशनी,

मछली का तेल, और विटामिन-डी की सप्लीमेंट्स इसके अच्छे स्रोत हैं। विटामिन-डी थायरॉइड को समस्या और डिप्रेशन के लक्षणों को भी कम करने में मदद करता है।

भरपूर मात्रा में प्रोटीन- प्रोटीन हड्डियों के निर्माण और मरम्मत में अहम भूमिका निभाता है। मांस, अंडे, दाल, और सोयाबीन प्रोटीन के अच्छे स्रोत हैं।

नमक कम करें- ज्यादा नमक खाने से हड्डियों में कैल्शियम कम होने लगता है।

एक्सरसाइज करें

वजन उठाने वाले व्यायाम करें- वेट लिफ्टिंग एक्सरसाइज हड्डियों को मजबूत बनाने में मदद करते हैं। ये व्यायाम हड्डियों पर दबाव डालते हैं, जिससे हड्डियों का घनत्व बढ़ता है और वे मजबूत बनती हैं।

एरोबिक एक्सरसाइज करें- योग, तैराकी, और डांस जैसी व्यायाम भी हड्डियों की सेहत के लिए फायदेमंद होते हैं।

नियमित व्यायाम करें- हफ्ते में कम से कम 3-4 बार एक्सरसाइज जरूर करें।

जीवनशैली में बदलाव

स्मोकिंग न करें- स्मोकिंग हड्डियों की डेंसिटी को कम करता है और ऑस्टियोपोरोसिस के खतरे को बढ़ाता है।

शराब न पिएं- शराब का सेवन भी हड्डियों के स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचा सकता है।

तनाव मैनेज करें- तनाव हड्डियों के घनत्व को कम कर सकता है। योग, ध्यान, और गहरी सांस लेने जैसे तनाव मैनेज करने की तकनीकों का अभ्यास करें।

इंटरमिटेंट फास्टिंग या कीटो डाइट जानिए दोनों में से क्या है बेहतर

आज के समय में हर व्यक्ति ज्यादा फिट दिखना चाहता है और एक हेल्दी लाइफस्टाइल जीना चाहता है। इसके लिए सबसे जरूरी होता है कि आप अपनी डाइट पर फोकस करें। जब आपकी डाइट अच्छी होती है और आप अपने हेल्थ कंसर्न को ध्यान में रखते हुए डाइट लेते हैं तो इससे आपको काफी अच्छे रिजल्ट मिलते हैं। हालांकि, ऐसी कई डाइट है, जो पूरी दुनिया में बहुत पॉपुलर हैं और अधिकतर लोग उन्हें फॉलो कर रहे हैं।

मसलन, कीटो डाइट और इंटरमिटेंट फास्टिंग को लोग काफी पसंद कर रहे हैं। खासतौर से, जो लोग वेट लॉस करना चाहते हैं, उनके लिए ये डाइट काफी अच्छी मानी जा रही हैं। हालांकि, कई बार लोग इस बात को लेकर कन्फ्यूज रहते हैं कि उन्हें इनमें से किस डाइट को फॉलो करना चाहिए, जिससे उन्हें अधिक

फायदा हो। दरअसल, दोनों ही डाइट के अपने-अपने फायदे और नुकसान हैं, इसलिए किसी भी डाइट को शुरू करने से पहले आपको इन दोनों के फायदे व नुकसान के बारे में जान लेना चाहिए, जिससे आप खुद के लिए एक बेस्ट डाइट सलेक्ट कर पाएं-

इंटरमिटेंट फास्टिंग के फायदे व नुकसान

इंटरमिटेंट फास्टिंग को फॉलो करते हुए आपको अपनी ईटिंग को टाइम बाउंड करना पड़ता है। इस डाइट में ईटिंग विंडो व फास्टिंग विंडो होता है। टाइम रिस्ट्रिक्शन होने की वजह से व्यक्ति अपेक्षाकृत कम कैलोरी इनटेक करता है।

इंटरमिटेंट फास्टिंग मेटाबॉलिज्म व इंसुलिन सेंसेटिविटी को बेहतर बनाती है। जिससे फैट बर्निंग में मदद मिलती है।

इसमें आपको कैलोरी गिनने या मैक्रोन्यूट्रिएंट्स को ट्रैक करने की आवश्यकता नहीं है। यह इस बारे में अधिक है कि आप कब खाते हैं, न कि आप क्या खाते हैं।

इसमें फास्टिंग पीरियड अधिक चैलेंजिंग हो सकता है, खासकर शुरुआत में, जिससे भूख और चिड़चिड़ापन हो सकता है।

कुछ खास बीमारियों वाले लोग, गर्भवती महिलाएं या फूड डिसऑर्डर से जूझ रहे लोगों के लिए इंटरमिटेंट फास्टिंग को फॉलो करना मुश्किल हो सकता है।

इंटरमिटेंट फास्टिंग को फॉलो करने के लिए आपको खाने की टाइमिंग को लेकर सख्त होना पड़ता है और इसलिए हर किसी के शेड्यूल में फिट नहीं हो सकता है।

कीटो डाइट के फायदे व नुकसान

कीटो डाइट एक हाई फैट डाइट है, जिसमें प्रोटीन को मॉडरेट और कार्बोहाइड्रेट को कम लिया जाता है। कीटो डाइट के अपने कई फायदे व नुकसान हैं-

कीटो डाइट भूख को कम करने और फैट बर्न करने में मदद करती हैं, जिससे वेट लॉस करना आसान हो जाता है।

कीटो डाइट ब्लड शुगर लेवल को कम करने और इंसुलिन सेंसेटिविटी में इंप्रूव करने में सहायक है, इसलिए इसे टाइप 2 डायबिटीज से पीड़ित लोगों के लिए काफी अच्छा माना जाता है।

इसमें कार्ब्स अधिक ना होने के कारण ब्लड शुगर क्रेश की शिकायत नहीं होती है, जिससे आपका एनर्जी लेवल स्टेबल रहता है।

कीटो डाइट में हाई फैट कंटेंट आपको फुलर होने का अहसास करवाता है, जिससे आपका ओवरऑल कैलोरी इनटेक कम हो जाता है।

चूंकि, कीटो आहार बहुत अधिक रिस्ट्रिक्टिव होती है, जिससे लंबे समय तक इसे फॉलो करना मुश्किल होता है। इसके लिए मैक्रोन्यूट्रिएंट्स की सावधानीपूर्वक ट्रैकिंग की आवश्यकता होती है।

जैसे-जैसे शरीर कीटोसिस के अनुकूल होता है, आपको थकान, सिरदर्द और चिड़चिड़ापन सहित फ्लू जैसे लक्षण महसूस हो सकते हैं।

कीटो डाइट में कई फलों, अनाज और सब्जियों को अक्सर अवॉयड किया जाता है, जिससे शरीर में पोषक तत्वों की कमी हो सकती है।

इस मौसम में बढ़ा सकता है एलर्जिक अस्थमा का खतरा, इन तरीकों से करें मैनेज

वर्षा सुकून, खुशी के अलावा अपने साथ कई बीमारियों को भी साथ लेकर लाता है। इस मौसम में जॉन्डिस, फ्लू, टाइफाइड, हेपेटाइटिस ए का तो खतरा बढ़ ही जाता है, साथ ही अस्थमा मरीजों की भी हालत बुरी हो जाती है। जिससे आपकी डे टू डे की लाइफ पर असर पड़ सकता है।

एलर्जिक अस्थमा

अस्थमा का सबसे आम प्रकार है, जो पालतू जानवरों की रूसी, फफूंद, धूल के कण या पोलन के संपर्क में आने पर ट्रिगर हो जाता है।, जिससे सांस लेने पर वायुमार्ग में सूजन और जलन हो सकती है और

इससे सांस लेना मुश्किल हो जाता है। इसके चलते खांसी, घरघराहट और सीने में जकड़न जैसे लक्षण नजर आते हैं। कुछ लोगों को इसके चलते नाक बंद होना, खुजली या आंखों से पानी आना, चकत्ते जैसी समस्याएं भी हो सकती हैं।

अस्थमा के कारण

अस्थमा कई कारणों से हो सकता है। इसमें पारिवारिक इतिहास, बचपन में सांस से जुड़ा कोई इन्फेक्शन, केमिकल के संपर्क में ज्यादा रहना, धूम्रपान, मोटापा, तंबाकू के धुएं के संपर्क में आना, घर में ऐसे ईंधन (लकड़ी/गाय का गोबर/केरोसिन) का उपयोग जिससे धुआं निकलता है और वायु प्रदूषण शामिल हैं। ये सभी कारण अस्थमा होने के जोखिम को बढ़ा सकते हैं या मौजूदा लक्षणों को और गंभीर बना सकते हैं इसके अलावा, अस्थमा और भी कई तरह से हो सकता है और इनमें से हर एक के अपने अलग लक्षण और ट्रिगर होते हैं।

इनमें व्यायाम से होने वाला अस्थमा और एलर्जी अस्थमा शामिल हैं। हालांकि कुछ चीजों पर ध्यान

देकर इस स्थिति को काफी हद तक कंट्रोल में रखा जा सकता है।

जांच और प्रबंधन

एलर्जिक अस्थमा का पता लगाने के लिए, कई तरह के परीक्षण किए जाते हैं। इनमें ब्लड टेस्ट या स्किन प्रिक टेस्ट जैसे टेस्ट शामिल हैं, जिनसे एलर्जेन सेंसिटिविटी का पता लग जाता है। जबकि अस्थमा से जुड़े टेस्ट, जैसे कि स्पाइरोमेट्री या (एफईएनओ -) का इस्तेमाल फेफड़ों के फंक्शन को समझने के लिए किया जा सकता है।

इन टेस्ट के आधार पर मरीज को जरूरी उपचार बताए जाते हैं, जिसमें इनहेलेशन थेरेपी सबसे पहला ऑप्शन है। जिससे मरीज को तुरंत राहत मिलती है। कई बार अस्थमा बहुत खतरनाक भी हो सकता है, तो इसके लिए डॉक्टर्स इमरजेंसी दवाएं भी सजेस्ट करते हैं।

एलर्जिक अस्थमा को ऐसे करें कंट्रोल

वसंत, मानसून के मौसम में जितना हो सके घर के अंदर रहें।

डीह्यूमिडिफायर या एयर कंडीशनर का इस्तेमाल कर घर के अंदर की नमी को बरकरार रखें।

नियमित रूप से अपनी दवाओं का सेवन करें। अस्थमा के मरीज हैं, तो घर में एयर फिल्टर जरूर लगाएं, जो कमरे की हवा को साफ बनाने का काम करते हैं।

क्षमावाणी विशेष

जीवन को सरल और आत्मा को शुद्ध बनाने के लिए 10 उत्तम लक्षण

दुनिया में जितने भी पर्व हैं, उन सभी का किसी न किसी घटना या महापुरुष से संबंध हैं। लेकिन क्षमावाणी पर्व का संबंध किसी घटना या महापुरुष से नहीं है। इतना ही नहीं देश-काल, क्षेत्र विशेष, जाति-धर्म से भी इसका कोई संबंध नहीं है। यह पर्व तो शाश्वत है क्योंकि यह पर्व आत्मा की शुद्धि का पर्व है। इसलिए इसे महापर्व कहते हैं। जैन धर्म में इसे सभी पर्वों का सम्राट माना जाता है। वैसे सभी धर्मों में किसी न किसी रूप में इसका उल्लेख मिलता है। मनुस्मृति और गीता में भी इसका उल्लेख मिलता है। जैन धर्म में धर्म के दस लक्ष्ण बताए गए हैं, जिन्हें चातुर्मास के दौरान भाद्रपद मास में दसलक्ष्ण महापर्व के रूप में मनाया जाता है। धर्म के दस लक्ष्णों में क्षमा, मार्दव, आर्जव, शौच, सत्य, संयम, तप, त्याग, आकिंचन और ब्रह्मचर्य आते हैं। हां एक बात और खास है कि इन सभी के साथ उत्तम शब्द जरूर जुड़ा होता है यानी ये सभी लक्षण उत्तम ही होने चाहिए।

जैन धर्म के अनुयायियों के लिए महावीर स्वामी ने बनाए थे ये पांच महाव्रत

- **उत्तम क्षमा :** क्रोध हर जीव का सबसे बड़ा शत्रु है। उसे जीतना ही उत्तम क्षमा है।
- **उत्तम मार्दव :** किसी भी प्रकार के मान यानी अभिमान को खत्म करने का उत्तम मार्दव धर्म की आराधना कहते हैं।
- **उत्तम आर्जव :** अपने हृदय को मायाचारी से बचाकर सरल बनाने को ही उत्तम आर्जव धर्म की आराधना कहते हैं।
- **उत्तम शौच :** लोङ को त्याग कर जीवन में शुचिता यानी पवित्रता को अपनाना ही उत्तम शौच धर्म की आराधना है।
- **उत्तम सत्य :** सभी के लिए हित, मित व प्रिय वचन बोलना ही उत्तम सत्य धर्म की आराधन है।
- **उत्तम संयम :** अपनी आत्मा के विकारी भावों को नष्ट करना ही उत्तम संयम धर्म की आराधन है।
- **उत्तम तप :** इच्छाओं का निषेध कर, अपने आत्मस्वरूप में लीना होना ही उत्तम तप धर्म की आराधन है।
- **उत्तम त्याग :** पर-द्रव्यों से मोह छोड़कर उनका त्याह करना ही इस धर्म की आराधना है।
- **उत्तम आकिंचन :** मेरी आत्मा के सिवाय किंचिंत मात्र भी पर-पदार्थ मेरा नहीं है। ऐसा चिंतन-मनन करना ही उत्तम आकिंचन धर्म की आराधना है।
- **उत्तम ब्रह्मचर्य :** अपनी आत्मा में रमण करना ही उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म की आराधना है।

पारसनाथ जैन धर्म का सबसे बड़ा तीर्थस्थल

दश लक्षण पर्व के दस दिनों में उपरोक्त दस धर्मों की आराधना कर आत्मा परम पवित्र बन जाती है तो फिर उत्तम क्षमा धर्म की आराधना की जाती है। दूसरों के प्रति जाने-अनजाने में हुई गलतियों के लिए क्षमायाचना के साथ-साथ अपने हृदय में भी संसार के सभी प्राणियों के प्रति क्षमाभाव धारण किया जाता है। यही उत्तम क्षमा धर्म की आराधना और साधना है।

परमात्मा की भक्ति का पर्याय पर्वाधिराज पर्युषण

इहलोक से परलोक तक की यात्रा में सबसे आवश्यक है- बोझ विहीन हो, आत्मा का परमात्मा से मिलना तभी सम्भव है, जब मन कषाय रहित हो, शरीर त्रास मुक्त हो, मस्तिष्क क्षमा भाव में हो और साथ में जीवन आसक्ति से अनासक्ति की ओर हो।

ये भाव तभी आ सकते हैं, जब मन पर कोई प्रमाद या किसी तरह का कोई वज़न न हो। मन को मुक्त करने के लिए जिन शासन ने आत्मा की शुद्धि का उपाय बताया है, वही पर्वाधिराज पर्युषण है। आत्म शुद्धि का मूल तत्त्व बताया है, वही क्षमापना पर्व है।

आगम अनुसार, 'वह महायात्रा, जो सिद्धक्षेत्र में जन्म प्रदान कर अनंत की साधना की ओर अग्रसर करती है, जीवन की सरल, सहज और सर्वोत्तम यात्रा, जो जिनेश्वर देव तक हमें भवबन्धनों से मुक्ति देकर मोक्ष मार्ग का अनुगामी बनाती है, वह यात्रा का प्रथम पड़ाव मन को बोझविहीन बनाने से पूरा होता है। आत्मा की शुद्धि का पर्याय पर्वाधिराज पर्युषण है, जिस पर्व में मनुष्य कषायों से मुक्त होकर, समस्त पापों का पश्चाताप करके, समस्त लोभ, मान, माया, मोह इत्यादि को इसी संसार में छोड़कर एक सुंदर मार्ग का अनुगामी बन जाता है, जिस मार्ग पर जिनेश्वर भक्ति ही उसका एकमात्र सहारा होती है, उस मार्ग से ही परमात्मा ने मोक्ष को प्राप्त करना बताया है।

यह सत्य है कि मनुष्य जीवन भर अपनी इच्छाओं के पीछे भागता रहता है। जीवन में कुछ इच्छाओं की पूर्ति तो हो जाती है, पर ज़्यादातर इच्छाओं की पूर्ति नहीं हो पाती। मनुष्य द्वारा मनवांछित इच्छाओं की जब पूर्ति हो जाती है, तब वह फूले नहीं समाता। उस कार्य की पूर्ति का सारा श्रेय वह स्वयं को देता है। जब इच्छा की पूर्ति नहीं हो पाती, तब वह ईश्वर को दोष देने लगता है और अपने भाग्य को दोष देने लगता है।

मनुष्य की इच्छाएँ अनंत होती हैं। वे धारावाहिक रूप से एक के बाद एक आती और चली जाती हैं। एक इच्छा की पूर्ति के बाद दूसरी इच्छा मन में फिर उठने लगती है। इस प्रकार जीवन-पर्यन्त यही क्रम निरंतर चलता रहता है। परंतु इन सबके बीच वह भूल जाता है कि इच्छाओं के भयावह सागर में डुबकी लगाने के उपरान्त वह निकल नहीं पाएगा, जबकि मनुष्य का जन्म केवल जीवन यापन के लिए नहीं बल्कि चौरासी के फेरे से मुक्ति यानी मोक्ष प्राप्ति, ईश्वर प्राप्ति के लिए हुआ है। आगत-अनागत पापों के क्षय के लिए हुआ है। और वह जब सिद्ध अरिहंत परमात्मा के ध्यान से विरक्त होकर संसार के भौतिक सुखों को पाने के लिए इच्छाओं की नाव में सवार हो जाता है तो फिर उसका दैहिक लोक से महायात्रा की ओर प्रस्थान विकट हो जाता है। कर्म उपार्जन आरम्भ हो जाता है, जिन कर्मों की निर्जरा फिर कठिन हो जाती है और मनुष्य यहीं फंस जाता है।

जबकी आत्मा को मोक्ष या पुनर्जन्म से मुक्ति पाने के लिए मौजूदा कर्मों की निर्जरा करना चाहिए और नए कर्मों के संचय को रोकना चाहिए। निर्जरा शारीरिक और आध्यात्मिक तपस्या से गुज़रने से प्राप्त होती है।

कर्मों की निर्जरा के लिए ही परमात्मा ने पर्युषण का मार्ग बताया। आगम यही कहते हैं कि जीवन की परम साधना का रसास्वादन तब ही संभव है, जब व्रती जीवन महाव्रत के मार्ग पर चलकर समस्त पाप कर्मों का क्षय कर के परम विभूति को प्राप्त करें।

उदाहरण के लिए हमें इन्दौर से भोपाल जाना है, तो निश्चित रूप से हम इस हेतु किसी गाड़ी पर सवार होंगे। जब हम भोपाल पहुँचेंगे तब इन्दौर छूट जाएगा, और भोपाल का लुत्फ़ उठाना है तो गाड़ी भी छूटेगी। यदि हमने गाड़ी नहीं छोड़ी तो हम भोपाल का आनंद नहीं ले पाएँगे। उसी तरह शरीर रूपी गाड़ी से हम मृत्युलोक से अरिहंत लोक तक की यात्रा के महायात्री हैं। इसलिए मृत्युलोक का मोह, मान, माया, रिश्ते, नाते, धन-दौलत, सम्पदा, दोष, गुण और भाव संस्कार इत्यादि सब मृत्युलोक में ही छूट जाने चाहिए, फिर जिस शरीर से हम सिद्ध क्षेत्र जाना चाहते हैं, वह शरीर भी छूट जाना चाहिए और तब ही अंत में हम परम ज्योति अरिहंत परमात्मा को प्राप्त कर पाएँगे। इसलिए सिद्ध ज्ञानियों ने, आचार्यों ने मोक्षमार्ग की यात्रा को बोझविहीन बनाने के लिए आत्मशुद्धि का पर्व, पर्वाधिराज पर्युषण को बताया है। जैन धर्मावलंबियों को तो इस बात की जानकारी है कि क्षमा पर्व अथवा संवत्सरी पर्व का उद्देश्य क्या है!

विश्व के समस्त धर्मों में क्षमा को न केवल शामिल किया गया, बल्कि अंगीकार भी किया गया। सिर्फ़ जैन धर्म ही हमें क्षमाभाव रखना नहीं सिखाता है, सभी धर्म यही कहते हैं कि हमें सबके प्रति अपने मन में दया और क्षमा का भाव रखना ?चाहिए। जैसे सनातन के धर्माचार्य स्वामी विवेकानंद ने कहा है कि- 'तमाम बुराई के बाद भी हम अपने आपको प्यार करना नहीं छोड़ते तो फिर दूसरे में कोई बात नापसंद होने पर भी उससे प्यार क्यों नहीं कर सकते?'

सिक्ख सम्प्रदाय के दसवें गुरु गोविंद सिंह जी कहते हैं- 'यदि कोई दुर्बल मनुष्य तुम्हारा अपमान करता है, तो उसे क्षमा कर दो, क्योंकि क्षमा करना वीरों का काम है।' इसी तरह ईसा मसीह ने भी सूली पर चढ़ते हुए यही कहा था कि- 'हे ईश्वर! इन्हें क्षमा करना, ये नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं!'

मुस्लिम सम्प्रदाय के धर्मग्रंथ कुरान शरीफ़ में भी लिखा है- 'जो वक्त पर धैर्य रखे और क्षमा कर दे, तो निश्चय ही यह बड़े साहस के कामों में से एक है।'

इसी तरह भगवान महावीर स्वामी और हमारे अन्य संत-महात्मा भी प्रेम और क्षमा भाव की शिक्षा देते हैं। यही शाश्वत सत्य है कि हर मनुष्य के अंदर क्षमा भाव का होना बहुत ज़रूरी है।

'क्षमा वीरस्य भूषणम्' की परम्परा वाला जैन निश्चित रूप से जगत् में सर्वाधिक ताक़तवर तीर्थंकर को मानता है और वही तीर्थंकर सबसे अधिक क्षमावान भी होते हैं। मानव मात्र के कल्याण का यह पर्वाधिराज पर्युषण भी आत्म कल्याण और परमात्मा की भक्ति का पर्याय है। परमात्मा की भक्ति का भाव जीवन में बना रहे। इसी तरह मनः पर्व पर्वाधिराज पर्युषण सहित जीवन पर्यन्त आराधना के अक्षत अखण्डित रहें।

- डॉ. अर्पण जैन 'अविचल'
इन्दौर, मध्यप्रदेश
(लेखक मातृभाषा उन्नयन संस्थान के राष्ट्रीय अध्यक्ष व पत्रकार हैं।)

क्षमावाणी पर्व पर सहनशील बनाती है क्षमा, जानें क्या है इसका महत्व

जैन परंपरा में पर्युषण (दशलक्षण) महापर्व के ठीक एक दिन बाद जो महत्वपूर्ण पर्व मनाया जाता है, वह है - क्षमा पर्व। इस दिन श्रावक (गृहस्थ) और साधु दोनों ही वार्षिक प्रतिक्रमण करते हैं। पूरे वर्ष में उन्होंने जाने या अनजाने यदि संपूर्ण ब्रह्मांड के किसी भी सूक्ष्म से सूक्ष्म जीव के प्रति यदि कोई भी अपराध किया हो, तो उसके लिए वह उनसे क्षमा याचना करता है। अपने दोषों की निंदा करता है और कहता है- 'मिच्छा मे दुक्कडं' अर्थात् मेरे सभी दुष्कृत्य मिथ्या हो जाएं।

जीवखमयंति सव्वो खमादियसे च याचइ सव्वेहिं।
'मिच्छा मे दुक्कडं' च बोल्लइ वेरं मच्झं ण केण वि॥

क्षमा दिवस पर जीव सभी जीवों को क्षमा करते हैं, सबसे क्षमा याचना करते हैं और कहते हैं मेरे दुष्कृत्य मिथ्या हों तथा मेरा किसी से भी बैर नहीं है। वे प्रायश्चित भी करते हैं। इस प्रकार वह क्षमा के माध्यम से अपनी आत्मा से सभी पापों को दूर करके, उनका प्रक्षालन करके सुख और शांति का अनुभव करते हैं।

श्रावक प्रतिक्रमण में प्राकृत भाषा में एक गाथा है- 'खम्मामि सव्वजीवाणं सव्वे जीवा खमंतु मे। मित्ती मे सव्वभूदेसु, वेरं मज्झं ण केण वि।।' अर्थात मैं सभी जीवों को क्षमा करता हूं, सभी जीव मुझे क्षमा करें। मेरा प्रत्येक प्राणी के प्रति मैत्री भाव है, किसी के प्रति वैर भाव नहीं है।

'क्षमावीरस्य भूषणं'

क्षमा आत्मा का स्वभाव है, किंतु हम हमेशा क्रोध को स्वभाव मान कर उसकी अनिवार्यता पर बल देते आए हैं। क्रोध को यदि स्वभाव कहेंगे तो वह आवश्यक हो जाएगा, इसीलिए जैन आगमों में क्रोध को विभाव कहा गया है, स्वभाव नहीं। 'क्षमा' शब्द 'क्षम' से बना है, जिससे 'क्षमता' भी बनता है। क्षमता का मतलब होता है सामर्थ्य और क्षमा का मतलब है किसी की गलती या अपराध का प्रतिकार नहीं करना। क्योंकि क्षमा का अर्थ सहनशीलता भी है। क्षमा कर देना बहुत बड़ी क्षमता का परिचायक है। इसीलिए नीति में कहा गया है -'क्षमावीरस्य भूषणं' अर्थात क्षमा वीरों का आभूषण है।

'क्षमा वाणी' उत्तम क्षमा का व्यावहारिक रूप है। वचनों से अपने मन की बात को कहकर जिनसे बोलचाल बंद है, उनसे भी क्षमा याचना करके बोलचाल प्रारंभ करना अनंत कषाय को मिटाने का सर्वोत्तम साधन है।

साप्ताहिक समय माया

लोनिवि संभाग 1 में वीआइपी व्यवस्था के विशिष्ट श्रेणी के भ्रष्टाचार

मध्यप्रदेश शासन,
लोक निर्माण विभाग
"मंत्रालय"
वल्लभ भवन, भोपाल-462 004

क्रमांक 3224 4751/2023/19/यो, भोपाल, दिनांक 06/09/2024.

प्रति,

(1) प्रमुख अभियंता, लोक निर्माण विभाग, अरेरा हिल्स, भोपाल.
(2) प्रबंध संचालक, मध्यप्रदेश सड़क विकास निगम, भोपाल.
(3) समस्त मुख्य अभियंता, लोक निर्माण विभाग ....परिक्षेत्र
(4) समस्त अधीक्षण यंत्री, लोक निर्माण विभाग, ... मण्डल ....

विषय :- लोक निर्माण विभाग की सड़कों को गड्ढामुक्त रखने बाबत्।

सन्दर्भ :- इस कार्यालय का पत्र क्रमांक 2786/2024/19/यो, दिनांक 12.08.2024.

--000--

विषयांकित सन्दर्भित पत्र द्वारा प्रदेश की सड़कों पर पैंचवर्क कर गड्ढामुक्त बनाए जाने हेतु 15 दिवस का व्यापक अभियान दिनांक 07 से 22 अगस्त, 2024 के दौरान लिए जाने के निर्देश दिए गए थे। संबंधित कार्यपालन यंत्रियों द्वारा अभियान उपरान्त सड़कों में पैंचवर्क कार्य पूर्ण कर गड्ढामुक्त कराए जाने संबंधी प्रमाण-पत्र हस्ताक्षर कर प्रस्तुत किए गए हैं। इन प्रमाण-पत्रों की सत्यता की जांच किए जाने हेतु औचक निरीक्षण अन्य मण्डलों/सम्भागों के अधीक्षण यंत्री/सम्भागीय प्रबंधक स्तर से संलग्न सूची अनुसार किए जाने हेतु **दिनांक 09 से 15 सितम्बर, 2024** तक एक विशेष अभियान चलाया जाना है।

2/ संलग्न सूची अनुसार अधीक्षण यंत्री/सम्भागीय प्रबंधक आवंटित मण्डल की अधिकाधिक सड़कों का आकस्मिक निरीक्षण कर शासन को वस्तुस्थिति का प्रतिवेदन **दिनांक 18 सितम्बर, 2024** तक अनिवार्यतः प्रस्तुत करें।

संलग्न :- उपरोक्तानुसार।

(के.सी.गुप्ता)
अपर मुख्य सचिव
मध्यप्रदेश शासन, लोक निर्माण विभाग

लोक निर्माण विभाग (सड़क/सेतु)

स.क्र.	लो.नि.वि. मंडल का नाम	निरीक्षण करने वाले अधिकारी का नाम
1	भोपाल मंडल क्रमांक–1	श्री व्ही.के.झा, अधीक्षण यंत्री, गुना मण्डल।
2	भोपाल मंडल क्रमांक–2	श्री अजय आनंद लिखार, अधीक्षण यंत्री, कार्या. प्रमुख अभियंता भोपाल।
3	राजधानी परियोजना मंडल भोपाल	श्री आर.डी. चौधरी, अधीक्षण यंत्री, कार्या. प्रमुख अभियंता (भवन) भोपाल।
4	नर्मदापुरम मण्डल	श्री आर.जी.शाक्य, अधीक्षण यंत्री, कार्या. प्रमुख अभियंता भोपाल।
5	इंदौर, मण्डल	श्री पी.एस.झानिया, अधीक्षण यंत्री, मण्डल खण्डवा।
6	खण्डवा मण्डल	श्री सुभाष पाटिल, अधीक्षण यंत्री, मण्डल नर्मदापुरम।
7	उज्जैन मण्डल	श्री एम.एस.रावत, अधीक्षण यंत्री, मण्डल इंदौर।
8	जबलपुर मण्डल	श्री आर. के. जैन, अधीक्षण यंत्री, मण्डल सिवनी।
9	सिवनी मण्डल	श्री कुल्हाड़े, अधीक्षण यंत्री, मण्डल शहडोल।
10	रीवा मण्डल	श्री के.के.लच्छे, अधीक्षण यंत्री, मण्डल जबलपुर।
11	शहडोल मण्डल	श्री सी.पी.सिंह, अधीक्षण यंत्री, मण्डल सागर।
12	ग्वालियर मण्डल	श्री एस.के.डेहरिया, अधीक्षण यंत्री, मण्डल नौगांव।
13	गुना मण्डल	श्री जी.पी.पटेल, अधीक्षण यंत्री, मण्डल उज्जैन।
14	सागर मण्डल	श्री योगेन्द्र कुमार, अधीक्षण यंत्री, भोपाल।
15	नौगांव मण्डल	श्री एम.के. द्विवेदी, अधीक्षण यंत्री मण्डल रीवा।

(ए.आर. सिंह)
उप सचिव
म.प्र.शासन लोक निर्माण विभाग

म.प्र. सड़क विकास निगम

स.क.	संभाग का नाम	निरीक्षण करने वाले अधिकारी का नाम
1	ग्वालियर	श्री एस.के. मनवानी,संभागीय प्रबंधक, उज्जैन।
2	चम्बल	श्री डी.के. स्वर्णकार, संभागीय प्रबंधक, नर्मदापुरम।
3	भोपाल	श्री श्याम गुप्ता, संभागीय प्रबंधक, धार।
4	उज्जैन	श्री पी.एस. राजपूत, संभागीय प्रबंधक, चम्बल।
5	इंदौर	श्री राजीव श्रीवास्तव संभागीय प्रबंधक, ग्वालियर।
6	धार	श्री नितिन बर्वे, संभागीय प्रबंधक, सागर।
7	रीवा	श्री आशीष पटेल, संभागीय प्रबंधक, छिन्दवाड़ा।
8	जबलपुर	श्री उमेश सिंह, संभागीय प्रबंधक, सीधी।
9	शहडोल	श्री आर.एस. चंदेल, संभागीय प्रबंधक, जबलपुर।
10	छिंदवाड़ा	श्री ए.के. स्र्वणकार, संभागीय प्रबंधक, शहडोल।
11	सागर	श्री राकेश जैन, संभागीय प्रबंधक, इंदौर।
12	नर्मदापुरम	श्रीमती सोनल सिंहा, संभागीय प्रबंधक,भोपाल।

(ए.आर. सिंह)
उप सचिव
म.प्र.शासन लोक निर्माण विभाग

पेज 8 का शेष

बेरीकेडिंग के नाम पर ही 50 करोड रुपए से ज्यादा हजम कर लिया गया। जबकि एस ओ आर में रु. 7000 वर्ग मीटर में रनिंग पक्की दीवाल बना दी जाती है। इसमें भी ठेकेदार 20 से 50% तकनीचे मेंठेका लेकर बना देता हैपरंतु में वेरिकेडिंग जो की अधिकांश लोहे की बनाई जाती है। 20 साल तक रंग रोगन कर लोक निर्माण विभाग नगर निगम पालिकायें पुलिस विकास प्राधिकरण अधिकांश एक ही बेरिकेडिंग केवल हर बार नहीं बनाकर लगाना में न केवल इंदौर में वरन उज्जैन में भी वीआईपी मूवमेंट ज्यादा होता है। वहां पर कार्यपालन यंत्री अहिरवार जो पिछले वर्ष ही प्रभार में बैठा है। प्रफुल्ल जैन जो सहायक यंत्री व उपयंत्रियों का गिरोह के साथ मध्य प्रदेश में ग्वालियर, जबलपुर, भोपाल में भी यही खेल चलता रहता हैं। जो वर्ष भर में 1000 करोड रुपए से ज्यादा हो जाता है। पर सरकार का लोक निर्माण विभाग के साथ शहरीय विकास मंत्री व प्रधान सचिव प्रमुख व मुख्य अभियंता मिलकर इस वर्ष भर में 1000 करोड रुपए से ज्यादा की लूट को रोक सकते हैं। परंतु मुख्यमंत्री मोहन यादव मुख्य सचिव वीरा राणा के साथ मंत्री राकेश सिंह प्रधान सचिव केसी गुप्ता, प्रमुख अभियंता आरके मेहरा लोक निर्माण विभाग के साथ शहरीय विकास मंत्रालय के प्रधान सचिव मंत्री आयुक्त से लेकर निगम आयुक्तों से लेकर परिषदों के मुख्य कार्यपालन अधिकारियों का सबको लूट का महिना मिल रहा है। इसलिए कोई भी हरामखोर जालसाज कार्यपालन यंत्री लोक निर्माण विभाग वह निगमों के आयुक्त व परिषदों के मुख्य कार्यपालिका अधिकारी सूचना के अधिकार में कभी भी जवाब नहीं देते हैं।

क्योंकि हर संभाग वह निगमों पालिकाओं में भवनों, पथों के लिपाई पुताई मरम्मत रखरखाव निर्माण में ऑनलाइन ऑफलाइन टेंडर की आड़ में सैंकड़ो करोड़ के भ्रष्टाचार के साथ अनेकों प्रकार के खरीदी, बिक्री, ठेके देने भुगतान करने आदि में 10 से 30% का भ्रष्टाचार तो निश्चित ही होता है। जो 100% तक पहुंच सकता है। जब भ्रष्टाचार के टुकड़ों में से हर किसी को अपना बराबर टुकड़ा मिल रहा हो, तो जांच कौन करेगा? यही कारण है कि सूचना अधिकार अधिनियम को लगे 19 वर्ष गुजर जाने के बाद में भी धारा 4 के 25 बिंदुओं के अंतर्गत सॉरी टेंडर भुगतान यहां तक की कार्य और सामग्री की आपूर्ति की एमबी ऑनलाइन की जानी चाहिए जो आज तक केंद्र व राज्य के सभी मंत्रालयों के विभागों के केंद्रराज्यके मुख्यालय से लेकर संभागीय व जिला कार्यालयों के किसी भी विभाग ने किसी भी स्तर पर पूरी नहीं की।

जब लोक निर्माण विभाग के संभाग एक में ही इतना भारी भ्रष्टाचार किया जाता है जनता से लूटा हुआ पैसा बंदरबांट में खत्म कर जन सुविधाओं के नाम पर कागजी कार्यवाहियों कि खानापूर्तियां ज्यादा होती हैं। वास्तविकता में तो आप देख ही रहे हैं। पूरे प्रदेश में बारिश के करण हर शहर की निगम पालिकाओं परिषदों से लेकर गांव देहातों की सड़कों के हाल जो जिला, तहसील, मुख्यालय से लेकर देश और प्रदेश की राजधानी को जोड़ती है जब अधिकांश नई सड़कों से लेकर पुरानी सड़कों की मरम्मत पुनर्नवीनीकरण का कार्य ठेके पर पर फॉर्मेंस गारंटी के साथ होता है तो सड़कें थोड़ी सी बरसात में भी खराब होकर जनता के लिए परेशानी व दुर्घटनाओं का कारण जो मौत पर जाकर खत्म होता है क्यों बन जाती है?

बेशक सभी विभागों में इंजीनियर ऑन से लेकर सभी कर्मचारियों अधिकारियों का स्टाफ मात्र 20 से 30% बचा है। जबकि काम का बोझ 4 गुनाबढ़ चुका है। केंद्र में सत्ता में भाजपा के आने के बाद भारतीयों पर पूरी तरीके से प्रतिबंध लगा रखा है ताकि जनता से लूटा हुआ धन वह अपने 4 से 10 गुना कीमत पर करवाये जा रहे कामों में 60% से 100% तक की लूट कर सकें। नहीं की जा रही है इसलिए काम की गुणवत्ता बिगड़ रही है और जहां तक ब्रेस्टन का सवाल है तो सब सारा प्रदेश के न केवल लोक निर्माण विभाग शहरी विकास सभी विभागों में पिछले 8-5 सालों से भारतीय ना देने के कारण अधिकांश विभागों के अधिकांश विभागीय अधिकारी प्रभार पर चलने के कारण प्रभार की जो मासिक के चुकानी होती है। खुलकर भ्रष्टाचार करने में लगे रह वर्षों से एक ही स्थान पर बैठे हुए हैं। नए मुख्यमंत्री मोहन यादव से उम्मीद थीकि वह सारी व्यवस्थाओं को नियमानुसार चला कर सुधरेंगे पर वह भी माफियाओं के माफिया है। इसलिए चारों तरफ भ्रष्ट डकैतों की फौज को पाला जा रहा है।

इंदौर में बैठे अधिकांश इंजीनियर मनोज सक्सेना से लेकर प्रभारी सहायक यंत्री जादौन अभय राज दुबे सविता टीके जैन के साथ अधीक्षण यंत्री एमएस रावत जो व्यापमं कांड के सरगना होकर इन्होंने लोक निर्माण विभाग के अतिरिक्त भी इंदौर-उज्जैन संभाग में पदस्थ अनेकों विभागों के अनेकों अधिकारियों से मोटा पैसा लेकर उनके बच्चों केचिकित्सा शिक्षा में प्रवेश करवाए थे और जब कार्रवाई शुरू हुई तो 3 साल तक इन्होंने झाबुआ बड़वानी अलीराजपुर के जंगलों में फरारी काटी। इतने भारी आरोप होने के बाद भी विभाग ने बिना किसी जांच पड़ताल केपुनः कार्यपालन यंत्री बनाने के बाद प्रभारी अधीक्षण यंत्री इंदौर मंडल का प्रभार देने के साथ वर्तमान में इंदौर उज्जैन संभाग के 13 जिलों के लोक निर्माण विभाग भवन के मुख्य अभियंता के रूप में पदस्थ कर रखा है। स्वाभाविक हैकरोड़ कमाईतो करुणा लूट कर भी भ्रष्टाचार के दम पर अधीक्षक मंत्री होने के साथ भवन के मुख्य अभियंता भी है। जो वर्तमान में इंदौर मंडल के अधीक्षक इंद्री होने के कारणसमय विस्तार के साथ-साथ सप्लीमेंट्री बजट के नाम पर 20 से 40% के कमीशन पर इंदौर मंडल में लगने वाले 6 संभागों इंदौर संभाग एक व दो विद्युत यांत्रिकीय, धार, झाबुआ, अलीराजपुर मैं धड़ल्ले से ऑनलाइन ऑफलाइन टेंडर के कामो में स्वीकृतियां देकर मोटी कमाई करने के साथ ठेकेदारों से संभागों यत्रियों की भी मोटी कमाई करवा रहे हैं। यही कारण है कि इस षड्यंत्र की आड़ में ठेकेदार पहले 30 से 40% तक नीचे में टेंडर लेकर बाद में सप्लीमेंट्री बजट के नाम परकार्य स्वीकृत करवा व कर मोटी कमाई करते रहते हैं। भवन के मुख्य अभियंता होने के कारण वहां अधीक्षण यंत्री नहीं है। वहां पर भी ठेकों में टेंडर स्वीकृति पर ही 2% वसूलने के साथ भवनों की मूल डिजाइन को बदलने विस्तार करने काटने छांटने समय विस्तार करने, अधिक कार्य दिखाकर धन की स्वीकृति देने में भी मोती वसूली कर रहे हैं आखिर इनको क्यों नहीं हटा कर भोपाल में ऑफिस अटैच किया जा रहा?

यही कारण है की सूचना के अधिकार में अधिकांश संभागसूचना के अधिकार अधिनियम की धारा 2(j)iv के अंतर्गत सीधी या यूआरएल मांगने पर वह न देकर हजारों रुपए की फोटोकॉपी के बिल दिए जाने के बाद अपील लगाने पर जो अनाप-शनाप धन की मांग की जाती है। जो की धारा 18एक के डी के अंतर्गत अपील योग्य होने के कारण अपील लगाने परभी बिना समझे और पढ़े संभाग द्वारा मांगे गये धन को जमा करने का आदेश देकर आवेदकों को प्रताड़ित किया जाता है।

नैतिकता के आधार पर CJI को देना चाहिए इस्तीफा

पेज 1 का शेष

इंडियन एक्सप्रेस की रिपोर्ट के मुताबिक, सेवानिवृत्त न्यायाधीशों और प्रतिष्ठित वकीलों ने कई सवाल उठाए, जिसमें यह भी शामिल था कि क्या इस दौरे को सार्वजनिक किया जाना चाहिए था. इस बीच, विपक्षी दलों ने इस दौरे के औचित्य पर सवाल उठाए, जबकि सत्तारूढ़ भाजपा ने इसे एक स्वस्थ लोकतंत्र का प्रतिबिंब बताया और कहा कि 'शिष्टता' और 'सौहार्दपूर्ण व्यवहार' दिखाने में कुछ भी गलत नहीं है. मुख्य विपक्षी दल कांग्रेस ने इस पर कोई टिप्पणी नहीं की. वहीं, शिवसेना (यूबीटी) ने कहा कि सीजेआई को शिवसेना के विभाजन से जुड़े मामले, जिसे शीर्ष अदालत सुन रही है, से खुद को अलग कर लेना चाहिए. भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश आरएम लोढ़ा ने अखबार से कहा कि संवैधानिक रूप से सत्ता का विभाजन है और न्यायपालिका और कार्यपालिका के बीच सामान्य रूप से एक निश्चित दूरी बनाए रखी जानी चाहिए. उन्होंने गुरुवार को कहा, 'ऐसी बैठक से न्यायपालिका के बारे में लोगों की धारणा प्रभावित होती है, लेकिन न्यायिक निर्णय लेने की प्रक्रिया प्रभावित नहीं होती. न्यायाधीश स्वतंत्र रूप से वही करेंगे जो वह करना चाहते हैं. मेरी याददाश्त में यह पहली बार है कि प्रधानमंत्री भारत के मुख्य न्यायाधीश के आधिकारिक आवास पर गए हैं.' गुरुवार को एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में राज्यसभा सांसद और सुप्रीम कोर्ट बार एसोसिएशन के अध्यक्ष कपिल सिब्बल ने अपनी 'व्यक्तिगत रूप' से कहा कि वह प्रधानमंत्री मोदी के सीजेआई चंद्रचूड़ के आवास पर जाने के वीडियो क्लिप को देखकर हैरान हैं. सिब्बल ने कहा, 'मुझे यकीन है कि शायद सीजेआई को यह नहीं पता होगा कि इसे प्रचारित किया जा रहा है, यह दुखद है. दूसरी बात यह है कि भारत के प्रधानमंत्री को ऐसे निजी कार्यक्रम में जाने में कभी दिलचस्पी नहीं दिखानी चाहिए थी, क्योंकि प्रधानमंत्री और जिन लोगों से उन्होंने सलाह ली होगी, उन्हें प्रधानमंत्री को बताना चाहिए था कि इससे गलत संकेत जा सकता है.' उन्होंने इस बात जिक्र किया कि महाराष्ट्र में जल्द ही विधानसभा चुनाव होने जा रहे हैं, ऐसे में प्रधानमंत्री के लिए निजी समारोह को सार्वजनिक तमाशा बनाने का यह उपयुक्त समय नहीं है. इलाहाबाद उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त मुख्य न्यायाधीश गोविंद माथुर ने कहा कि इस दौरे को 'सार्वजनिक' करना अनुचित था. नवंबर 2018 से अप्रैल 2021 तक इलाहाबाद उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के रूप में कार्य करने वाले सेवानिवृत्त न्यायाधीश ने कहा, 'मेरी राय में इस मुलाकात को सार्वजनिक करना उचित नहीं था. मुझे नहीं पता कि किसने किसे आमंत्रित किया था, लेकिन मैं कह सकता हूं कि इस तरह की घटनाओं से जनता की नज़र में न्यायपालिका की छवि प्रभावित हो सकती है.' उन्होंने कहा, 'मुझे नहीं लगता कि यह दौरा सीजेआई के भविष्य के फैसलों को प्रभावित करेगा, लेकिन यह निश्चित रूप से लोगों के बीच उनकी छवि को प्रभावित करेगाष्ठ यह गलत संदेश दे सकता है.' दिल्ली हाईकोर्ट की पूर्व न्यायाधीश जस्टिस (सेवानिवृत्त) रेखा शर्मा ने कहा, 'इस भेंट को हर हाल में टाला जाना चाहिए थाष्ठसरकार से जुड़े मामले और हाल ही में मानवाधिकारों के उल्लंघन से जुड़े मामले सर्वोच्च न्यायालय के समक्ष आ रहे हैं. इस तरह के परिदृश्य में भारत के मुख्य न्यायाधीश और प्रधानमंत्री के बीच सामाजिक बातचीत पीड़ितों और वादियों के मन में आशंका पैदा करती है.' लेकिन मद्रास उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश जस्टिस (सेवानिवृत्त) के. चंद्रू ने कहा कि किसी को भी इसे मुद्दा नहीं बनाना चाहिए. उन्होंने कहा, 'न्यायपालिका के प्रमुख होने के नाते सीजेआई द्वारा अपने घर में गणेश पूजा करना और कार्यकारी शाखा के प्रमुख को आमंत्रित करना गलत नहीं हैष्ठ शायद उन्हें इस बारे में सार्वजनिक रूप से नहीं बताना चाहिए था. लेकिन उस आयोजन के ज़रिये सीजेआई की ईमानदारी को बदनाम करना बचकाना और अपरिपक्व है.' उधर, वरिष्ठ अधिवक्ता इंदिरा जयसिंह ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, 'भारत के मुख्य न्यायाधीश ने कार्यपालिका और न्यायपालिका के बीच शक्तियों के विभाजन को लेकर समझौता किया है. सीजेआई की स्वतंत्रता पर से पूरा भरोसा उठ गया है. एससीबीए को सीजेआई की कार्यपालिका से स्वतंत्रता के इस सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित समझौते की निंदा करनी चाहिए.'

जयसिंह ने इंडियन एक्सप्रेस में लिखे एक लेख में कहा कि सबसे बड़ा सवाल यह है कि क्या सीजेआई अपने पद की शपथ के प्रति सच्चे हैं. सुप्रीम कोर्ट ने माना है कि धर्मनिरपेक्षता संविधान की एक बुनियादी विशेषता है. उपेंद्र बक्सी को उद्धृत करते हुए एसआर बोम्मई बनाम भारत संघ (1994) मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने माना कि संविधान में 'धर्मनिरपेक्षता' का अर्थ है कि राज्य स्वयं किसी धर्म को नहीं अपनाएगा, स्थापित नहीं करेगा या उसका पालन नहीं करेगा.

यतो धर्मस्ततो जयः पूजा करना ही नहीं चाहिए, करते हुए दिखना भी चाहिए

इस समय जब हमारे चारो ओर 'न्याय चाहिए-न्याय चाहिए' की गुहार गूंज रही है। न्याय विचार की गूंज को बड़े ध्यान से सुनना चाहिए। भारत के सर्वोच्च न्यायालय का ध्येय वाक्य है, 'यतो धर्मस्ततो जयः'। अर्थात जहाँ 'धर्म' है वहाँ 'जय' है। धर्म और जय को ठीक से समझना होगा। क्योंकि इस दुनिया की बहुत बड़ी आबादी की न्याय व्यवस्था के शिखर का यह ध्येय वाक्य और लोकतंत्र का आखिरी भरोसा है।

धर्म का अर्थ बहुत व्यापक है। धर्म के अर्थ में कर्तव्य, जीने और जीने देने की इच्छा, न्याय, परोपकार, गुण नेति-नेति, यहीं अंत नहीं है। क्योंकि तर्कोऽप्रतिष्ठः श्रुतयो विभिन्ना नैको ऋषिर्यस्य मतं प्रमाणम्। धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायां महाजनो येन गतः स पन्थाः। तर्क नहीं, श्रुतियां भी नहीं, ऋषि भी नहीं है, धर्म का तत्त्व बहुत गूढ़ है; अतः जिससे महापुरुष जाते रहे हैं, वही मार्ग है। मुश्किल यह है कि 'महापुरुषों' की भी भरमार है! तो फिर! कस्मै देवाय हविषा विधेम! अपना कौन, पराया कौन? अयं बन्धुरयं नेति गणना लघुचेतसाम्, उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्। संकीर्ण चेतना के लोग अपने-पराये का भेद करते हैं। उदार चेतना के लोग अपने-पराये का हिसाब-किताब नहीं करते हैं। उदार चेतना संपन्न लोगों के लिए पूरी पृथ्वी परिवार है, अपना है।

धर्म कहां है! धर्म का मुख्य स्थान दक्षता है। 'यतो धर्मस्ततो जयः' तो फिर जहां दक्षता है, वहीं जय है! हमें आधा ही याद रहता है, 'सत्यमेव जयते', पूरा है 'सत्यमेव जयते नानृतं'! मन में कुछ, वचन में कुछ और व्यवहार में कुछ तो जय नहीं है। मन यानी सामूहिक रूप से लोकमन, वचन यानी संविधान और कानून और व्यवहार का मतलब लोकमन और संविधान की पारस्परिक अनुकूलता का लागू होना। सामान्य रूप से जय का अर्थ जीत समझा और माना जाता है, लेकिन जय का अर्थ जीत नहीं है। जीत नहीं तो क्या है? जय शब्द का अर्थ महाभारत नामक इतिहास ही है; 'जयो नामेतिहासोऽयम्' कुल मिलाकर यह कि सभी आर्ष-ग्रंथों की संयुक्त संज्ञा 'जय' है।

न्याय की चाहत में मारी-मारी यहां-वहां दौड़ लगाती 'हिंदुस्तानी आबादी' बुदबुदाती फिरती है, 'न्याय चाहिए' और 'न्याय होना ही नहीं चाहिए, होते हुए दिखना भी चाहिए।' न्याय-सिद्धांत और व्यवहार के संदर्भ में इस वाक्य-खंड को याद किया जाना हमेशा प्रासंगिक हो जाता है। यह वाक्य-खंड कहां से आया! क्या था वह मामला! असल में इंग्लैंड के तत्कालीन लॉर्ड चीफ जस्टिस लॉर्ड हेवर्ट ने रेक्स बनाम ससेक्स के मामले में (1924) कहा था 'यह केवल कुछ महत्व का नहीं है, बल्कि मौलिक महत्व का है कि न्याय न केवल किया जाना चाहिए, बल्कि प्रकट रूप से और निस्संदेह होता हुआ दिखना चाहिए।'

न्याय के किसी भी संदर्भ पर विचार करते समय नैतिकता की भावनाओं, ज्ञान स्रोत, कार्यान्वयन के साधन को भी ध्यान में रखना जरूरी होता है। नैतिकता का अनिवार्य गुणसूत्रात्मक संबंध न्याय की अवधारणा से होता है। इच्छा स्वातंत्र्य की स्थिति में ही नैतिकता का सवाल उठता है। जहां इच्छा स्वातंत्र्य नहीं, वहां नैतिकता नहीं। न्याय इस अर्थ में नैतिकता से भिन्न होता है कि वह इच्छा स्वातंत्र्य के खुले आकाश को संवैधानिक दरो-दीवार और विवेक का कोर-किनारा देता है। संवैधानिक दरो-दीवार और विवेक का कोर-किनारा छूटते ही इच्छा स्वातंत्र्य मनमानेपन की अनैतिकता में बदल जाता है।

मनमानेपन का आलम यह कि संस्कृति की राजनीति, भविष्य को इतिहास की तरह और इतिहास को भविष्य की तरह से बांचने लगती है। संस्कृति की राजनीति के पास वर्तमान का कोई भाष्य नहीं होता है। इसलिए संस्कृति की राजनीति वर्तमान की किसी भी पीड़ा को सुनने से परहेज करती है। संस्कृति की राजनीति की मनमानी समझ में वर्तमान वह बिंदु होता है जिस के दायें इतिहास और बायें भविष्य होता है।

वर्तमान होता ही नहीं है। संस्कृति की राजनीति 'दायें' लपकती रहती है और 'बायें' झपटती रहती है। इतिहास और भविष्य काल के दो छोर होते हैं। संस्कृति की राजनीति के मनमानेपन की इंतहा यह कि काल-रेखा को काल-चक्र में बदल देती है। संस्कृति की राजनीति भाग्य-रेखा बांचने की 'हिसाब-किताब की गलत कला' से मनुष्य की कर्मठता के गले में भाग्य-चक्र का फंदा डाल देती है।

यहां धर्म और विज्ञान में काल की अवधारणाओं पर ध्यान देने से कुछ बातें साफ-साफ दिख सकती है। विज्ञान काल की गति को रैखिक मानता है। रेखाओं का आदि और अंत दोनों होता है। रैखिकता खुद को दोहराती नहीं हैं। इसलिए विज्ञान में पुराने से लगाव और नये का आकर्षण होता है। विज्ञान अपने को दोहराता नहीं है। धर्म काल की गति को चाक्रिक मानता है। चक्र का आदि होता है, न अंत होता है। धर्म काल को अनादि और अनंत मानता है। धर्म में नया कुछ नहीं होता है, बस दोहराव होता है। अधिकतर भारतीयों के मन का अधिकांश 'धर्म' के दखल में होता है। वह नयेपन के साथ नहीं मनमानेपन की काल्पनिकताओं के साथ जीने में भरमा रहता है।

सीधी रेखा पर चलनेवाला कार्तिकेय शक्ति की शर्त हार जाता है। शक्ति के चारो ओर वर्तुलाकर दिशा में गोल-गोल चक्कर लगानेवाला या चक्र बनानेवाला गणेश शक्ति की शर्त जीत जाता है। गणेश परिक्रमा का बहुत धार्मिक महत्व है; तीर्थ यात्री परिक्रमा की महिमा जानते हैं। यही महिमा धर्म-प्रधान देश के गणतंत्र को 'पवित्र गणेशतंत्र' में बदल देती है; कभी-कभी 'अपवित्र गनतंत्र' में भी। 'चूहे' की शक्ति के बल पर जनता 'हाथी' का बोझ उठाती है। जनता के जिस हिस्से का हाथ हाथी के जिस भाग को टटोल पाता है उसे लोकतंत्र के वैसे ही आकार-प्रकार का एहसास होता है। भगवान गणेश की तरह से शक्ति के चारो और गोल-गोल घूमते रहने में ही सफलता का रहस्य छिपा होता है। गोल-गोल चक्कर लगाने से सफलता के रास्ते के सारे विघ्न स्वतः समाप्त हो जाते हैं।

कहते हैं, धर्म-निष्ठ बाल गंगाधर तिलक ने देश के लोगों में एकता के लिए महाराष्ट्र में गणेश पूजा शुरू की थी। बाल गंगाधर तिलक का 'कुनबी' बच्चों और तथाकथित 'निम्न जाति' के लोगों की शिक्षा और रोजगार के बारे में क्या विचार थे? उन्हें आम जनता की एकता की जरूरत ब्रिटिश हुकूमत से देश की आजादी के लिए थी, सही बात। लेकिन ब्रिटिश हुकूमत से आजादी के बाद देश की बहुसंख्यक जनता के साथ कैसा व्यवहार किया जाना उन की धर्म-न्याय-निष्ठता को मंजूर था? इन कुछ सवालों के भी जवाब खोजे जाने चाहिए। बात न्याय की है तो यकीनन इन चंद सवालों के जवाब से भी साबित हो जायेगा कि सामाजिक और आर्थिक न्याय से किस विचारधारा के क्या संबंध होते हैं। न्याय के होने के साथ-साथ न्याय के दिखने की बात की सैद्धांतिक स्वीकृति के साथ-साथ न्याय पर बहुसंख्यक के दबाव को भी आमंत्रण मिल गया। डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ने संविधान के बारे में कहा था कि अच्छा-से-अच्छा संविधान भी गलत आदमी के हाथ में पड़कर अच्छा नहीं रह जाता है। कहने का आशय यह है कि गलत इरादे अच्छी-से-अच्छी सिद्धांतकी की हवा निकाल देती है।

भारत के लोगों को इस का बहुत अनुभव है कि किस तरह से बहुसंख्यकों के दबाव का लाभ किस प्रकार से जनोत्तेजक दुर्जन नेताओं ने भरपूर उठाया था। लोकलुभावन नारों के साथ लोकतंत्र की मूल भावनाओं को साथ खेल जाने और पटरी से उतार देने का काम भी बहुसंख्यकवाद का दबाव आसानी से कर लेता है। समझदार लोग मुंह ताकते या 'अपनी जगह' पर टापते-हिनहिनाते रह जाते हैं। समझदारों की खामोशी के साथ हिंसा और नफरत की दहाड़ का संबंध कितना साफ-साफ सामने आ जाता है!

सतर्क रहने का यह समय है। सतर्क रहने का अर्थ यदि सामने उपस्थित परिस्थिति के अनुसार अपने आचरण को बेहतर तरीके से निर्धारित करना है तो सतर्क रहना मनुष्य की ही नहीं, जीव-मात्र की मूल प्रवृत्ति है। प्राण-रक्षा जीव-मात्र की मौलिक इच्छा है। प्राण-रक्षा के लिए सतर्क रहना जरूरी होता है। तेज आंधी उठने पर वृक्ष के झुक जाने का संबंध वृक्ष के मौलिक सतर्क आचरण से जरूर होता होगा।

मौलिक इच्छाओं, प्रवृत्तियों आदि का संबंध चेतन से अधिक अचेतन से होता है। इस अर्थ में मौलिक सतर्कता का संबंध अचेतन से होता है। सतर्क रहने के लिए विभिन्न तरह से तर्क करने या भिड़ाने की क्षमता सिर्फ मनुष्य में होती है। तर्क-वितर्क करने की क्षमता ने ही मनुष्य के 'मनुष्य' बनने की क्षमता का आधार दिया। यह बहुत आसान काम नहीं रहा है। क्योंकि तर्क-हीनता अंधत्व है लेकिन तर्क अप्रतिष्ठित रहती है और धर्म दक्षता के हाथों का लीला कमल!

गालिब ने यों ही नहीं कहा, 'बस-कि दुश्वार है हर काम का आसां होना, आदमी को भी मुयस्सर नहीं इंसां होना।' जीवन का अनुभव बताता है कि घने अंधेरे में यात्रियों की आंख पैर बन जाती है, घने अंधकार के यात्री आंख के बल पर यात्रा को जारी रखते हैं! जाहिर है कि तर्क-हीनता आदमी से इंसान बनने की यात्रा-पथ की सब से बड़ी बाधा होती है। तर्क में आदमी की शक्ति होती है, लेकिन शक्ति का अपना तर्क होता है।

शक्तिशालियों को शक्ति उन की 'रूढ़ क्षमता' से हासिल होती है। 'रूढ़ क्षमता' योग्यता में नहीं पद में निहित होती है। 'रूढ़ क्षमता' से संपन्न व्यक्ति यानी पदाधिकारी तर्क की कम ही सुनता है। कहना जरूरी है कि पदाधिकारी अपने पदाधिकार के मिथ्या तत्व की बनी तर्कपूर्णता की आक्रमकता से तर्क-आधारित वास्तविक समाधान का रास्ता रोक देता है। अंततः होता वही है जो 'रूढ़ क्षमता' से संपन्न व्यक्ति तय करता है, सारा-का-सारा तर्क-वितर्क ज्यों-का-त्यों धरा-का-धरा रह जाता है। कहने का आशय यह कि आदमी के इंसान बनने का रास्ता तर्क से तय होता है, लेकिन 'रूढ़ क्षमता' की तर्कपूर्ण आक्रमकता में अंतर्निहित तर्कहीनता आदमी को अंततः तर्कहीनता के दलदल में डाल देती है।

फिलहाल तो यह कि भारत के माननीय मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ और भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एक साथ गणेश पूजा करते हुए देखे गये हैं। यह पूजा भारत के माननीय मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ के आवास पर आयोजित थी।

भारत के प्रधानमंत्री भारत के माननीय मुख्य न्यायाधीश के आवास पर पहुंचे थे। जाहिर है कि प्रधानमंत्री माननीय मुख्य न्यायाधीश के यहां सादर, सविनय आमंत्रित थे या फिर किसी ईश्वरीय प्रेरणा से प्रकट हुए होंगे। मीडिया में सह-पूजन की दृश्यावली तैर रही है। यह कयासबाजी और नजबाजी (हलु) का जमाना है। इस पवित्र दृश्यावली पर भी तरह-तरह की कयासबाजी और नजबाजी हो रही है। कयासबाजी में आशंका यह है कि कहीं-न-कहीं कोई-न-कोई संकेत छिपा है, न्याय-पालिका और कार्य-पालिका के बीच समन्वय, समझौता, संवाद, समाधान का किसी अन्य अन्य प्रसंग का। सवाल पूजा को लेकर नहीं है। सवाल पूजा के माहौल और ईश्वर के साक्ष्य में संपन्न 'शुद्ध संयुक्त संकल्प' के सूत्रपात के शुभारंभ में छिपे सन्निपात को लेकर जरूर है।

मामला भारत के माननीय मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ और भारत के प्रधानमंत्री की संयुक्त गरिमा से जुड़ा हुआ है। एक भारत की न्याय-पालिका के शिखर हैं और एक कार्य-पालिका के शिखर हैं। सरकार की तरफ से पैदा किये गये किसी आफत से राहत के लिए आम नागरिक न्याय-पालिका के पास पहुंचता है। आम नागरिक को न्याय-पालिका पर भरोसा है। आफत और राहत के साथ-साथ होने की इस तरह की पवित्र दृश्यावली से आम आदमी का भरोसा लाचारी में बदलने लगता है। भरोसा कम हो जाये तो छाया में भूत दिखता है। लॉर्ड हेवर्ट ने तो 1924 में जो कहा उस का आशय यह था कि 'न्याय होना ही नहीं चाहिए, होते हुए दिखना भी चाहिए, सौ साल बाद 2024 में संस्कृति-संस्थापकों ने जो विश्वाधारम-गगन-सदृश्यम दृश्यावली सामने रखी है उस का संदेश है, 'पूजा करना ही नहीं चाहिए, करते हुए दिखना भी चाहिए।'

'शक्ति के पृथक्करण के सिद्धांत' के अनुसार शक्ति के शीर्ष लोगों की अ-भिन्नता में भिन्नता की पर्याप्त गुंजाइश रहनी चाहिए। 'शक्ति के पृथक्करण के सिद्धांत' की जरूरत 'शक्ति-संपन्नों के पृथक्करण' से ही पूरी हो सकती है।

एकता की जरूरत शक्ति के लिए होती है। शोषण से बचाव की शक्ति हासिल करने के लिए आम नागरिकों के बीच एकता की जरूरत होती है।

शक्तिशाली लोगों में शोषण की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है। तमाम संदेह और आशंका को झूठ साबित करते हुए, विघ्नहर्ता के सान्निध्य में शक्तियों का समन्वय भारत के लोगों के जीवन में के विघ्न को भी दूर करेगा ऐसी उम्मीद क्या कुछ अधिक और अतिरिक्त की अपेक्षा है? क्या पता! वक्त ही बता सकता है।

शक्तिशाली लोगों में 'एकता' हो जाने से आम नागरिकों की स्थिति का अंदाजा सहज ही लगाया जा सकता है। माननीय तो खुद 'अधीश' हैं! कोई कहे तो क्या कहे! बहुत मनोहारी है आफत और राहत के हिलमिल रहने की याद दिलानेवाला यह नदी-नाव संयोग। 'न्याय योद्धा' राहुल गांधी की न्याय परीक्षा के कई कठिन प्रश्न अभी लिफाफों में बंद हैं। अभी कई लिफाफों के खुलने का इंतजार करना ही मुनासिब है। अभी नदी-नाव संयोग का भी अर्थ खुलना बाकी है! 'अच्छे दिन' का इंतजार भी तो बाकी ही है! जी, अभी तो इंतजार-दर-इंतजार!

(प्रफुल्ल कोलख्यान स्वतंत्र लेखक और टिप्पणीकार हैं)

भारत में ऑनलाइन गेमिंग में महिलाओं और छोटे शहरों का बढ़ता रूझान

पेज 1 का शेष

लेकिन 'ज़ुपी' जैसी भारतीय कंपनियों का मुख्य फोकस ऑनलाइन खेलों पर है, जिसमें कई सुरक्षा उपाय और सीमाएं लगाई गई हैं। उदाहरण के लिए, दांव लगाने की सीमा तय है, और 18 वर्ष से कम उम्र के लोग इन खेलों में भाग नहीं ले सकते। इसके अलावा, लूडो जैसे खेलों की अवधि सीमित होती है, और अधिक समय तक खेलने पर गेमर को अलर्ट भी मिलता है।

ऑनलाइन जुआ और ऑनलाइन गेमिंग के बीच अंतर को समझना महत्वपूर्ण है। इस मुद्दे पर कई मामले हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट में पहुंचे हैं, जहां यह स्पष्ट किया गया है कि जिस खेल में दिमाग और कौशल का उपयोग होता है, वह जुआ नहीं है। वहीं, जहां केवल भाग्य का सहारा लिया जाता है, उसे जुआ कहा जाएगा। इस आधार पर लूडो, क्रिकेट टीम बनाना, घुड़दौड़, तीन पत्ती, और लॉटरी जैसे खेलों को जुआ की श्रेणी में रखा गया है।

'ज़ुपी' के पास आज 300 से अधिक कर्मचारी हैं, जिसमें आधे से ज्यादा आईआईटियन हैं। इस कंपनी के प्लेटफार्म पर 10 करोड़ से अधिक लोग लूडो खेलते हैं। इस तेजी से बढ़ते हुए सेक्टर में तकनीकी प्रगति और नवाचारों का बड़ा योगदान है, और यह उम्मीद की जा सकती है कि भविष्य में यह क्षेत्र और भी बड़े पैमाने पर विकसित होगा। हालांकि, इसके साथ ही यह आवश्यक है कि हम इसके संभावित नुकसान को ध्यान में रखते हुए जिम्मेदारी से आगे बढ़ें।

अमेरिका का पीढ़ियों को बर्बाद करने का षड्यंत्र

मोबाइल से बर्बाद करेंगे बच्चों के दिल दिमाग शरीर को

विश्व घातक संगठन स्कूलों में फ्रांस की तरह बंद क्यों नहीं करवाता मोबाइल

अमेरिकी विश्व घातक संगठन विश्व का सबसे बड़ा घटक आतंकवादी दुनिया की पीडिया को बर्बाद करने वाला संगठन है खाने को वह विश्व स्वास्थ्य संगठन कहता व लिखता है। परंतु यथार्थ में दुनिया ने उसका कोरोना में खेल देख लिया की किस प्रकार से अमेरिकी बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लाभ के लिए दुनिया की आबादी को बीमारी के भय से पीड़ित कर मानसिक व शारीरिक रूप से कमजोर कर बीमार बनाने और मृत्यु का तांडव कर खत्म करने का षड्यंत्र पिछले 78 सालों से लगातार चल रहा है।

बेशक पूरा विश्व घातक संगठन ईसाई मिशनरियों के वन वर्ल्ड ऑर्डर के अंतर्गत व इससे पूर्व से ही भारत के पूरे हिंदूओं के साथ हिंदू संस्कृति, चारों वेदों, पुराणों, उपनिषदों, शास्त्रों गीता भागवत रामायण को खत्म करने का षड्यंत्र भी सैकड़ों वर्ष पुराना है। क्योंकि जब तक हिंदू और हिंदू संस्कृति है तब तक ईसाइयों का सारा षड़यंत्र कारी खेल सफल नहीं हो सकता। यह वह अच्छी तरीके से जानते हैं इसलिए विश्व घातक संगठन बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक भोजन से लेकर जीवन पद्धति तक सबको नष्ट करने के लिए सरकारों को खरीद कर खाद्य सुरक्षा और मानक अधिनियम जैसे कानून थोपता है। फिर पैकेज रिपोर्ट के नाम परसीधा किसानों के खेत से ताज शुद्ध हिंदुओं की थाली में भोजन वह अन्य खाद्य पदार्थ न पहुंचें। इसके लिए सारे भोजन की सब्जियां आटा तेल मसाले घी गुड़ सबको फोर्टीफाइड कर उसमें घातक कीटनाशक प्रेजर्वेटिव्स रसायन मिला पैकेजिंग कर घातक बीमारियां बांटने के साथ मनमानी कीमत पर पहुंचने और जनता को लूटने का षड़यंत्र करता है। जो पिछले 50 साल से देश में

बहुराष्ट्रीय कंपनियों के कोका-कोला फंटा थम्स अप रासायनिक फलों का रस चॉकलेट बिस्किट यहां तक की नवजात शिशुओं को महीना पुराना डब्बा बंद कीटनाशक युक्त दूध बच्चों को पिलाने के विज्ञापनकर पूरी पीढ़ी को कमजोर बनाने का संरचना तो कर ही रहे हैं इसके आगे भी बच्चे अगर इन सबसे बच भी जाएं। तो आपने देखा करो ना में सारे देश दुनिया को बंद कर जबकि उस समय मार्च अप्रैल में का महीना बच्चों की परीक्षा का होता है 2020 में बंद कर बच्चों के न केवल साल बर्बाद किए गए बल्कि उनको स्कूल बंद कर ऑनलाइन शिक्षा देने का जो षड्यंत्र किया गया उसमें मजबूरी में गरीब से गरीब लोगों ने भी कर्ज लेकर बच्चों को पढ़ाने के लिए मोबाइल खरीदे। इससे भारत में ही अकेले चीनी कंपनियों के 10 करोड़ से ज्यादा मोबाइल की बिक्री होने के साथ उतने ही ग्राहक मोबाइल कंपनियों में जुड़ गए और यथार्थ में मोबाइल पर पढ़ाई करवाने के नाम पर बच्चों को दिल दिमाग और शरीर को कमजोर करने के कारण के साथ-साथ अमेरिकी चीनी रूसी बहुराष्ट्रीय कंपनियों के हजारों करोड़ प्रति दिन की कमाई वाले ऑनलाइन गेमिंग के षड़यंत्रो में भी बच्चों से बुजुर्गों तक को उलझा दिया गया। जबकि सरकार को चाहिए था की ऑनलाइन गेमिंग के चक्कर मेंजो शिक्षा के बहाने चिपकाई गई साइको करोड रुपए की विदेशी मुद्रा देश से बाहर जाती है इसलिए तत्काल सारे ऑनलाइन गेमिंग जो अमेरिका चीन रूस द्वारा बनाकर एक तरफ आर्थिक रूप सेजनता को कमजोर कर रही है तो दूसरी तरफ सरकार की विदेशी मुद्रा भी भारत से ले जा रही है प्रतिबंध लगा दिया जाना चाहिए।

विश्व घातक संगठन जो अपने आप को विश्व स्वास्थ्य संगठन लिखता बोलता है। को भविष्य की पीढ़ीयों को सुरक्षित रखने व तन मन से मजबूत बनाने तत्काल सारे दुनिया के स्कूलों में फ्रांस की तरह मोबाइल लैपटॉप आदि इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों पर प्रतिबंध लगा दिया जाना चाहिए। दुनिया के सभी स्कूलों में सारी पढ़ाई सिलेक्ट बत्ती से लेकर काफी किताबें और पेन के माध्यम से ही करवाई जानी चाहिए। अमेरिकी और चीनी मोबाइल दवा बनाने वाली कंपनियों के प्रबंधन के घोर धूर्त मूर्ख बदतमीजों और डकैतों को वीडियो को कमजोर बनाने की अपेक्षा तन मन से मजबूत बनाने से ही भविष्य में उनके माल की बिक्री हो सकेगी और उनकी कंपनियों का उत्पादन का बाजार होगा तो ही कंपनियां चलेंगी समझना चाहिए। यदि पीढ़ियों को बचपन से ही तन, मन, धन से कमजोर कर बीमार बना बिस्तर पर लेटा दिया या मृत्यु दे दी। तो आपका उत्पाद भूत नहीं खरीदेंगे वर्तमान में जीवित रहने वाली पीढ़ी ही खरीदेगी। **(शेष पेज 3 पर)**

लोनिवि संभाग 1 में वीआइपी व्यवस्था के विशिष्ट श्रेणी के भ्रष्टाचार

पिछले 5 वर्षों में 500 करोड रुपए से ज्यादा का भ्रष्टाचार

अधीक्षण, कार्यपालन व सहायक यांत्रियों के पिछले 5 साल की फोन की रिकॉर्डिंग निकाल सैंकड़ों करोड़ की बंदरबांट पकड़ी जा सकती है। बैरिकेडिंग, साज सज्जा के नाम ही सैकड़ों करोड़ की डकैती।

मध्य प्रदेश में पिछले 20 वर्षों से घोर भ्रष्ट जालसाज डकैत माफिया गिरोहों की 2014 के बाद इवीएम व बिना मशीनों शिव प्राप्त मतों की वर्गीकृत सारणी बनाएं जालसाजियों से बनी भाजपा की सरकारों के पूर्व 18 वर्ष तक बैठे रहे मुख्यमंत्री शिवराज व वर्तमान के मोहन यादव से लेकर हर मंत्रालयों के मंत्रियों से घोर भ्रष्ट मुख्य प्रधान सचिव से लेकर मंत्री व जिलों में बैठे अधिकारियों ने लाखों करोड़ की लूट का तांडव किया। इंदौर मध्य प्रदेश की व्यावसायिक राजधानी जहां पिछले 5 सालों में हर साल बड़े सम्मेलन जिसमें इन्वेस्टर समीट, जी20, खेलो इंडिया, और देश के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, गृहमंत्री, अन्य केंद्रीय मंत्रियों के साथ मुख्यमंत्री आदि के उद्घाटन व अन्य कार्यक्रमों के साथ विधानसभा लोकसभा की चुनावी सभाओं, मार्गों पर प्रदर्शन व सभाओं के लिये रेसीडेंसी कोठी में हर बार नया फर्नीचर खरीदने पुराने फर्नीचर को चुपचाप हजम कर जाने नीलामी का बहाना बनाकर कबाड़ियों को औने पौने बेचने का षड़यंत्र किया जाता है। जबकि कारपेट पंखे एयर कंडीशनर लाइटिंग पूरा फर्नीचर कारपेट से लेकर पर्दे गद्दे तकिए वगैरह सब निकाल कर संभाल कर अलग कर पुनः पुराना फर्नीचर रख दिए जाते हैं और हर बार जब किसी भी अति विशिष्ट या विशिष्ट व्यक्तियों का इंदौर आगमन होता है। तो हेलीपैड या हवाई अड्डे से लेकर रास्ते की पुलिस व्यवस्था में बेरिकेडिंग आदि का अलग- अलग करोड़ों रु के बिल बनाकर पुनः करोड़ों रु की वसूली कर अधीक्षण कार्यपालन यंत्री संभाग1 मनोज सक्सेना व पूरा उनके बरसों पुराने ठेकेदारों जो पूरे विभाग को सुरा सुंदरी से लेकर सभी प्रकार के छोटे-मोटे उल्टे सीधे सारे काम जो एस ओ आर रेट से 50% तक कम लेकर कागजों पर ही करवा देते हैं। र

वीकृत बिलों में बाबुओं से लेकर उप सहायक कार्यपालन अधीक्षण मुख्य इंदौर यंत्रियों को बंदर बांट करने से लेकर भोपाल इंदोर में पदस्थ लोकायुक्त के बंगले बनवा चुका है विभागीय इंजीनियरों जिसमें अधिकांश भिंड मुरैना के इसमें अभय राज दुबे, सविता जादौन हैं का गिरोह आंख मींच 5-6 सालों में अरबों रुपए का खेल कर चुका है। 19 सितंबर को राष्ट्रपति के आगमन के लिए रेसीडेंसी कोठी को फिर से करोड़ों रुपए से केवल सजाने, संवारने, लिपाई पुताई करने के साथ फर्नीचर पलंग गद्दे चादर तकिये कारपेट विद्युत व्यवस्थाएं वैद्युतकीय समानों शिव प्रकाश व्यवस्था एयर कंडीशनर पंखे खिड़की दरवाजों के पर्दे बदलने के नाम वहां बैठे प्रभारी कार्यपालन मंत्री मनोज सक्सेना, सहायक यंत्री सविता, अभय राज दुबे, के साथ जादौन और हाल ही में आए टी के जैन पिछले 5 सालों में 2 अरब से ज्यादा का भ्रष्टाचार कर चुके हैं।अकेले कोरोना काल में ही पुरानी सरकारी अस्पतालों में व 25 से ज्यादा पूरे इंदौर में नए कोविड मरीज के केंद्र बनाने व्यवस्थाएं करने मैं मनीष सिंह के साथ मिलकर मनोज सक्सेना और गिरोह ने पलंग बिस्तर टेबल कुर्सी टेंट लगाने पानी शौचालय आदि की व्यवस्था करने में एक-एक केंद्र पर 20 से 25 करोड रुपए काखेल किया जिसमें कम मात्रा दो से पांच करोड़ का भी नहीं हुआ अधिकांश केदो पर मरीज पहुंचे नहीं वहां की भी वेरिकेडिंग लगाने रास्ते रोकने की बेरी कड़ी पुलिस और नगर निगम को उठाकर लगाई गई परंतु बिल न केवल संभाग एक व दो में संभाग दो के क्षेत्र के बने वरन वह शहरीय क्षेत्रों की बिलिंग नगर निगम के साथ देपालपुर-सांवेर में नगर परिषदों ने भी की और पूरे इंदौर जिले में लगभग केवल

(शेष पेज 6 पर)

साप्ताहिक
समय माया
samaymaya.com

करोड़ों किसानों मजदूरों छोटे व्यवसायियों उद्योगों, सरकारी कर्मचारियों अधिकारियों ठेका संविदा कर्मियों के हितों की रक्षा व देशी विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियों के षड्यंत्रों के विरुद्ध पिछले 25 वर्षों से संघर्षरत

साप्ताहिक समयमाया समाचार पत्र व samaymaya.com की वेबसाइट पर समाचार, शिकायतें और विज्ञापन (प्रिंट एवं वीडियो) के लिए संपर्क करें

मप्र के समस्त जिलों में एजेंसी देना है एवं संवाददाता नियुक्त करना है

मो. 9425125569 / 9479535569

ईमेल: samaymaya@gmail.com
samaymaya@rediff.com

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक- अजमेरा एस.पी. कुमार द्वारा अपनी दुनिया प्रिंटर्स, 13 प्रेस कॉम्पलेक्स, ए.बी. रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 299, अम्बेडकर नगर, इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित।
संपादकः अजमेरा एस.पी. कुमार, मो. 9425125569, भोपाल प्रतिनिधि- एस.के. भारद्वाज मो. 9425637958